

दिल्ली में 2 से 16 अगस्त तक ड्रोन और छोटे हवाई उपकरणों के उड़ाने पर रोक

नई दिल्ली। दिल्ली पुलिस ने स्वतंत्रता दिवस समारोह के लिए राजधानी में 2 से 16 अगस्त तक ड्रोन सहित सभी तरह के छोटे हवाई प्लेटफॉर्म उड़ाने पर पूरी तरह प्रतिबंध लगा दिया है। दिल्ली पुलिस आयुक्त अनुराग कुमार द्वारा भारतीय नागरिक सुरक्षा संहिता (बीएनएसएस), 2023 की धारा 163 के तहत जारी किया गया यह आदेश 15 दिनों तक लागू रहेगा, जिसमें 15 अगस्त के समारोह से पहले और तुरंत बाद की अवधि शामिल है। आधिकारिक आदेश के अनुसार, ऐसी खबरें मिली हैं कि कुछ आपराधिक, असामाजिक तत्व या आतंकवादी उप-पारंपरिक हवाई प्लेटफॉर्मों का उपयोग करके आम जनता, गणमान्य व्यक्तियों और महत्वपूर्ण प्रतिष्ठानों की सुरक्षा के लिए खतरा पैदा कर सकते हैं।

खुफिया एजेंसियों से मिले इनपुट में आशंका जताई गई है कि असामाजिक तत्व या आतंकवादी ड्रोन और अन्य छोटे हवाई प्लेटफॉर्मों का इस्तेमाल



कर आम लोगों, वीआईपी, संवेदनशील सरकारी भवनों और स्वतंत्रता दिवस समारोह को निशाना बनाने की कोशिश कर सकते हैं। ऐसे किसी भी खतरे को पहले ही खत्म करने के लिए यह प्रतिबंध लगाया गया है।

बीएनएसएस के तहत प्राप्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए दिल्ली पुलिस आयुक्त ने निर्देश दिया कि अधिसूचित अवधि के दौरान दिल्ली राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र (एनसीटी) के अधिकार क्षेत्र में कहीं

भी इन चीजों को उड़ाने की अनुमति नहीं दी जाएगी।

आदेश में कहा, 'मैं स्वतंत्रता दिवस समारोह-2026 के अवसर पर दिल्ली राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र के ऊपर पैराग्लाइडर, पैरामोटर, हैंगग्लाइडर, यूएवी, यूएएस, माइक्रोलाइट विमान, रिमोट से संचालित विमान, हॉट एयर बैलून, छोटे आकार के संचालित विमान, क्वाडकोप्टर या विमान से पैरा जंपिंग आदि जैसे गैर-पारंपरिक हवाई प्लेटफॉर्मों की उड़ान पर रोक लगाता हूँ।'

दिल्ली पुलिस ने यह भी चेतावनी दी है कि इस निर्देश का उल्लंघन करने पर 'भारतीय न्याय संहिता, 2023 की धारा 223 के तहत दंडनीय कार्रवाई की जाएगी।' यह आदेश 31 जुलाई को जारी किया गया था और इसमें निर्दिष्ट किया गया है कि यह 2 अगस्त से प्रभावी होगा और 16 अगस्त तक (दोनों दिन शामिल) 15 दिनों की अवधि के लिए लागू रहेगा या जब तक कि इसे वापस नहीं ले लिया जाता।

धार्मिक अधिकार नहीं छीन सकते...परिसर के पास होगी शुक्रवार की नमाज, भोजशाला विवाद पर 'सुप्रीम' आदेश

सुप्रीम कोर्ट ने मध्य प्रदेश सरकार को निर्देश दिया कि वह धार में विवादित भोजशाला-कमल मौला परिसर के पास मुस्लिम समुदाय के लोगों के लिए शुक्रवार की नमाज़ अदा करने की उचित व्यवस्था करे। कोर्ट ने यह भी कहा कि अगर ज़रूरत हो, तो दोनों पक्षों की आपसी सहमति से पास की कोई दूसरी जगह भी चुनी जा सकती है। यह आदेश तब आया जब मुस्लिम पक्ष ने कोर्ट को बताया कि राज्य सरकार द्वारा चुनी गई वैकल्पिक जगह विवादित परिसर से बहुत दूर थी और सुप्रीम कोर्ट के पहले के निर्देशों के मुताबिक नहीं थी। भारत के मुख्य न्यायाधीश सूर्यकांत की अध्यक्षता वाली बेंच ने इस महीने की शुरुआत में दिए गए अपने अंतरिम आदेश को स्पष्ट किया और कहा कि मुस्लिम समुदाय के लोगों को दोपहर 1 बजे से 3 बजे के बीच खसरा नंबर 596 पर शुक्रवार की नमाज़ अदा करने की अनुमति होगी; यह जगह विवादित स्थल से सटी हुई दरगाह की ज़मीन बताई गई थी। बेंच ने मध्य प्रदेश सरकार को निर्देश दिया कि वह उस जगह पर नमाज़ की सुविधा के लिए ज़रूरी इंतज़ाम करे।



राज्यसभा में 'मनुस्मृति' पर घमासान, खड़गे के बयान पर जेपी नड्डा का वार

नई दिल्ली। राज्यसभा में विपक्ष और सत्ता पक्ष के बीच तीखी बहस हुई। यह बहस तब शुरू हुई जब विपक्ष के नेता मल्लिकार्जुन खड़गे ने 'पेपर लीक विरोधी बिल' पर चर्चा के दौरान मनुस्मृति का जिक्र किया, जिस पर सत्ता पक्ष ने कड़ी आपत्ति जताई। 'सार्वजनिक परीक्षा (अनुचित साधनों की रोकथाम) संशोधन विधेयक, 2026' पर बहस में हिस्सा लेते हुए, राज्यसभा में विपक्ष के नेता ने बीजेपी के नेतृत्व वाली केंद्र सरकार की शिक्षा नीतियों की आलोचना की। उन्होंने आरोप लगाया कि शिक्षा गरीबों की पहुँच से दूर होती जा रही है और विश्वविद्यालयों में अहम पदों पर RSS से जुड़े लोगों को नियुक्त किया जा रहा है।

खड़गे ने यह भी दावा किया कि स्कूल और यूनिवर्सिटी के सिलेबस में बदलाव किए जा रहे हैं और मनुस्मृति का जिक्र करते हुए आरोप लगाया कि यह शिक्षा में जातिगत भेदभाव को बढ़ावा देती है। खड़गे ने आरोप लगाया कि मनुस्मृति ने शिक्षा के क्षेत्र में जातिवाद

को बढ़ावा दिया है, जिस पर सत्ता पक्ष ने कड़ी आपत्ति जताई। इन टिप्पणियों के तुरंत बाद एनडीए सांसदों ने विरोध प्रदर्शन शुरू कर दिया, जिसके चलते सदन में नारेबाजी और बार-बार व्यवधान उत्पन्न हुआ।



सदन के नेता जेपी नड्डा ने खड़गे के दावों को खारिज करते हुए कहा कि ये बातें सच से बहुत दूर हैं और इनसे देश में गलत संदेश जा सकता है। बहस के दौरान किए गए जिक्र पर आपत्ति जताते हुए नड्डा ने कहा कि खड़गे को अपने बयान की पुष्टि करनी चाहिए। नड्डा ने कहा कि हम विपक्ष के नेता की बात शांति से सुन रहे हैं और लोकतंत्र में ऐसा करना सरकार की ज़िम्मेदारी है। लेकिन मैं विपक्ष के नेता से गुज़ारिश करता हूँ कि वे गुस्से में

आकर न बोलें या असंसदीय भाषा का इस्तेमाल न करें। उन्होंने अभी जो वाक्य इस्तेमाल किया है, वह असंसदीय है और उसे कार्यवाही से हटा दिया जाना चाहिए। उन्हें भावुक होकर ऐसी बातें कहने से बचना चाहिए।

जब बहस तेज़ हुई, तो राज्यसभा के चेयरमैन सीपी राधाकृष्णन ने दखल दिया और आदेश दिया कि मनुस्मृति और उद्धृत सामग्री के बारे में खड़गे की टिप्पणियाँ आधिकारिक रिकॉर्ड का हिस्सा नहीं होंगी। बहस के दौरान खड़गे ने तर्क दिया कि पेपर लीक रोकने के लिए प्रस्तावित कानून से सिर्फ सज़ा बढ़ाने या फ़ास्ट-ट्रैक कोर्ट बनाने से समस्या हल नहीं होगी।

उन्होंने कहा कि इसके बजाय, सिस्टम में सुधार करके प्रश्न-पत्र लीक होने से रोकने पर ध्यान दिया जाना चाहिए। खड़गे ने केंद्र सरकार पर शिक्षा का व्यवसायीकरण करने का आरोप भी लगाया और कहा कि गरीब छात्रों को समान अवसर मिलने में लगातार रुकावटें आ रही हैं।

रचनात्मक कांग्रेस का अधिवेशन 12 एवं 13 अगस्त को

नई दिल्ली। भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस द्वारा रचनात्मक कांग्रेस की स्थापना एक स्वतंत्र मंच के रूप में की गई थी। इस मंच का उद्देश्य राजनीतिक संरचनाएं, नागरिक समाज, कार्यकर्ताओं, शिक्षाविदों, सार्वजनिक वक्ताओं, बुद्धिजीवियों, कलाकारों, लेखकों एवं वर्तमान केंद्र सरकार व राज्यों की उसकी समकक्ष सरकारों की नीतियों से प्रभावित सभी समुदायों के मध्य चर्चा, साझा कार्रवाई, मुद्दा आधारित संवाद और सहयोग को सक्षम बनाना है। रचनात्मक कांग्रेस उन सभी संगठनों और व्यक्तियों के साथ गठबंधन बनाने का प्रयास करेगी, जो संविधान, राष्ट्रीय स्वतंत्रता आंदोलन के आदर्शों एवं एक उदार समावेशी तथा प्रगतिशील भारत में विश्वास रखते हैं।

स्थापना के सात महीने होने के बाद हम संगठन का औपचारिक परिचय देने तथा अभी तक की प्रगति को साझा करने के लिए अपने सहयोगियों, मित्रों और शुभचिंतकों को आगामी 12 एवं 13 अगस्त को आमंत्रित कर रहे हैं, जिसमें भविष्य की राजनीति तैयार करना, सामूहिक प्रतिभा का उपयोग भी करना है। 12 अगस्त को इंदिरा भवन नई दिल्ली में 9.30 से पंजीयन प्रारंभ हो अलग सत्र होंगे। भोजन दोपहर 13.30 बजे से 14 बजे तक होगा। समापन 6 बजे शाम को होगा। दूसरे दिन 13 अगस्त को मावलरकर हॉल में 9.30 से प्रारंभ होगा। 11.30 बजे राष्ट्रीय कांग्रेस अध्यक्ष खुरगेजी द्वारा संबोधन होगा। राहुल गांधी 15 से 18 बजे के मध्य उपस्थितजनों से खुली चर्चा करेंगे। तत्पश्चात 2 दिवसीय सम्मेलन का समापन होगा। रचनात्मक कांग्रेस के अध्यक्ष पूर्व सांसद संदीप दीक्षित ने कार्यक्रम को सफल बनाने की अपील सामाजिक कार्यकर्ताओं एवं बुद्धिजीवियों से की है।



विशेष



समय दौड़ रहा है... रिश्तों की रफ्तार धीमी हो रही है

मेरे अज़ीज़ बुजुर्गों, नौजवानों और प्यारे भाइयों!

आज का हमारा मौजू बहुत अहम है-समय दौड़ रहा है, लेकिन रिश्तों की रफ्तार धीमी हो रही है।

आज इंसान के पास हर चीज़ है-महंगा मोबाइल, तेज़ इंटरनेट, सोशल मीडिया, सैकड़ों कॉन्टैक्ट और हजारों फॉलोअर्स। लेकिन अफसोस की बात यह है कि दिल से बात करने वाला इंसान कम होता जा रहा है।

कभी ऐसा दौर था कि पड़ोसी की तकलीफ़ पूरे मोहल्ले की तकलीफ़ होती थी। रिश्तेदार की खुशी पूरे खानदान की खुशी होती थी। अगर कोई बीमार पड़ जाता, तो लोग हाल पूछने उसके घर पहुँच जाते थे। आज हाल यह है कि लोग सिर्फ़ एक मैसेज भेजकर अपना फ़र्ज़ पूरा समझ लेते हैं।

इस्लाम हमें रिश्ते जोड़ने की तालीम देता है, तोड़ने की नहीं। माँ-बाप की ख़्दिमत, रिश्तेदारों से अच्छा सुलूक, पड़ोसियों का खयाल और मुसलमानों से मोहब्बत—ये सब दीन का हिस्सा हैं।

आज हम सुबह उठते ही मोबाइल देखते हैं, लेकिन कई बार अपने माँ-बाप का चेहरा तक नहीं देखते। हम सोशल मीडिया पर घंटों गुज़ार देते हैं, मगर अपने बच्चों से कुछ मिनट बैठकर बात नहीं करते। यही दूरी धीरे-धीरे रिश्तों को कमज़ोर कर देती है।

प्यारे भाइयों!

याद रखिए, जिस घर में मोहब्बत, अदब और रहमत होती है, उसी घर में बरकत उतरती है। अगर हम चाहते हैं कि हमारे बच्चे नेक बनें, तो उन्हें सिर्फ़ अच्छी तालीम नहीं, बल्कि अच्छा माहौल भी देना होगा।

नबी-ए-करीम? ने रिश्तों को जोड़ने, सलाम को आम करने, बीमार की अयादत करने, मेहमान की इज़्ज़त करने और माता-पिता की ख़्दिमत करने की बहुत ताक़ीद फ़रमाई। यही इस्लामी अख़लाक़ की पहचान है।

आज हम छोटी-छोटी बातों पर रिश्ते तोड़ देते हैं। विरासत, कारोबार, ग़लतफ़हमी या अहंकार की वजह से भाई-भाई से दूर हो जाता है। लेकिन सोचिए, अगर ज़िंदगी का आख़िरी दिन आ जाए, तो क्या ये झगड़े किसी काम आएंगे?

मेरे दोस्तों!

ज़िंदगी बहुत छोटी है। जो लोग आज हमारे साथ हैं, उनकी क़द्र कीजिए। अपने माँ-बाप से मोहब्बत कीजिए। रिश्तेदारों से मिलिए। अगर किसी से नाराज़गी है, तो पहल करके सुलह कर लीजिए।

आज ही यह इरादा करें—

- रोज़ कुछ समय परिवार के साथ बिताएँ।
- माँ-बाप का हाल पूछें।
- रिश्तेदारों से संपर्क बनाए रखें।
- पड़ोसियों का खयाल रखें।
- बच्चों को मोबाइल से ज़्यादा अपना समय दें।
- अगर किसी का दिल दुखाया है, तो माफ़ी माँग लें।
- किसी बीमार, बुजुर्ग या ज़रूरतमंद की ख़बर लें।

याद रखिए, क़यामत के दिन माल-दौलत नहीं, बल्कि नेक आमाल, अच्छे अख़लाक़ और अल्लाह की रज़ा काम आएगी।

आइए, हम सब यह अहद करें कि अपने घरों में मोहब्बत, रहमत और भाईचारे का माहौल पैदा करेंगे। रिश्तों को जोड़ेंगे, तोड़ेंगे नहीं। अपने बच्चों को इंसानियत, अदब और रहम की तालीम देंगे।

अल्लाह तआला हम सबको अपने माँ-बाप की ख़्दिमत करने, रिश्तेदारों के हक़ अदा करने, एक-दूसरे से मोहब्बत करने और समाज में भाईचारा कायम करने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए।

रब्बना आतिना फ़िहुन्या हसनतन, व फ़िल आख़रिति हसनतन, व फ़िना अज़ाबन्नार।

आमीन या रब्बल आलमी
मुहम्मद शारिब खान (मोटिवेशनल स्पीकर)
हार्डकोर्ट एडवोकेट/यूट्यूबर

भैरवसिंह मीणा सेवानिवृत्त तो रैपिड एक्शन फोर्स की वर्दी में कैसे?

इन सज्जन का नाम भैरव सिंह मीणा (69) है, वे राजस्थान के कोटा शहर के एक गांव में रहते हैं। यह सज्जन 11 साल पहले राजस्थान के अजमेर के एक थाने में कांस्टेबल के पद से रिटायर हुए हैं। यह सज्जन सरकारी पेंशन पर हैं।

अब सवाल यह है कि अगर यह बूढ़ा आदमी 11 साल पहले रिटायर हो चुका है, तो वह RAF (रैपिड एक्शन फोर्स) की वर्दी में कैसे है? उसे जंतर-मंतर पर कौन लाया? किसके कहने पर लाया? खैर, वह अकेला नहीं है, उसके जैसे 150 गुंडे हैं जो नकली RAF बन गए थे। यह यूनिट, रैपिड एक्शन फोर्स, CRPF के तहत काम करती है।

जब इस बूढ़े आदमी की वर्दी में फोटो वायरल हुई, तो CRPF कमांडर सुधेशु बनर्जी उसके पास गए और इस बूढ़े आदमी के खिलाफ सख्त कार्रवाई करने का फैसला किया। जब उन्हें पता चला कि यह बूढ़ा आदमी RAF की वर्दी में अकेला नहीं है, बल्कि ऐसे 150 लोग हैं।

जब उन्होंने उन 150 लोगों की जानकारी मांगी, तो गृह मंत्रालय ने वह जानकारी नहीं दी। अभी भी गृह मंत्रालय उन 150 लोगों की जानकारी देने से बच रहा है! जब सुधेशु बनर्जी को उन 150 लोगों की गुप्त जानकारी मिली,

तो उन्हें पता चला कि उन 150 लोगों में से आधे से ज़्यादा लोग गुंडे थे जो पुलिस रिकॉर्ड में वांछित अपराधी थे! यह बहुत गंभीर मामला है।

भाजपा सरकार सत्ता के लिए किसी भी हद तक जाने को तैयार है क्योंकि



अगर श्रीलंका, बांग्लादेश, नेपाल में जो हुआ वह हमारे साथ होता है, तो ऐसी नकली पुलिस व्यवस्था उन्हें बचाएगी। उसके लिए उन्होंने यह नकली RAF तैयार की है! हमने इसका नाम मोदी शाह सुरक्षा बल रखा है, इस नकली 'इ' में महिलाएं भी हैं जिनका काम शुरू में पुरुषों को रोकना है, अगर पुरुष नहीं सुनते हैं, तो वे ऐसे विकृत पुरुषों के खिलाफ छेड़छाड़ का मामला दर्ज करेंगी, उन्हें गलत जगह छूना (कल जंतर-मंतर पर जो हुआ उसमें कुछ प्रदर्शनकारियों के खिलाफ ऐसे मामले दर्ज किए गए हैं)।

सड़कों पर उतरा हुआ मुल्क घर वापस नहीं लौटता!

बारह साल की 'अधिनायकवादी' हुकूमत में हुए पहले इस्तीफ़े (या 17 अक्टूबर 2018 को 'Me Too' आंदोलन की भेंट चढ़े एम जे अकबर के बाद दूसरे) ने बीजेपी, संघ और एनडीए के सहयोगी दलों की चूल्हें हिला दी हैं। गुजरात में भोगे गए सत्ता के तेरह साल के एकछत्र शासन को भी मिलालें तो मोदीजी के पच्चीस सालों के लंबे राजनीतिक जीवन में यह पहला सदमा था कि सत्ता की जिस कमर को झुकवाने में किसानों को साल भर लग गया और साढ़े सात सौ लोगों को अपनी कुर्बानियां देनी पड़ी उसकी रीढ़ में सिर्फ़ एक छात्र आंदोलन ने 36 दिनों में छेद कर दिया।

पवित्र गुफाओं और शिलाओं पर की गई तपस्या से कमाया गया सत्ता का समस्त अहंकार एक झटके में ध्वस्त हो गया! अतिरंजित आत्मविश्वास की नकाब आधी रात को कब खिसक गई और परास्त नायक का असली चेहरा मुल्क के सामने कब प्रकट हो गया पता ही नहीं चल पाया। देश स्तब्ध रह गया।

कथित तौर पर कुख्यात इज़राइली तंत्र और तकनीकी की मदद से चलने वाले खुफ़िया साम्राज्य को सूंघ तक नहीं पड़ी कि बीस जुलाई को जो मार्च संसद की तरफ़ कूच करने वाला है उसके पेट में गुप्से और असंतोष का कितना बारूद समाया हुआ है।

सरकार सिर्फ़ राहुल गांधी को ही

अपना दुश्मन मानकर चल रही थी। देश की जनता को अपना हितैषी अथवा गुलाम मानती हुई निश्चित थी। मोदीजी विदेशों में बसने वाले अवसरवादी इण्डियन डायस्पोरा की संपन्नता को ही अपने सपनों का भारत मान बैठे थे। चौकीदार को खबर ही नहीं थी कि देश के करोड़ों युवा तो असली भारत को उनकी हुकूमत से आज़ाद कराने की तैयारी में जुटे हुए हैं!

सही पूछा जाए तो इस्तीफ़ा धर्मेन्द्र प्रधान का नहीं उस पूरी व्यवस्था का हुआ है जिसके तत्कालीन शिक्षा मंत्री 'मुनाफ़ाखोर' बन गए थे। संघ के नाराज़ क्षेत्रों, निष्काम मार्गदर्शक मंडल के साथ-साथ दल-बदलुओं की बढ़ती भीड़ के बीच हाशियों पर पटके जा रहे समर्पित भाजपाइयों ने राहत की साँस ली होगी कि जिस क्षण की उन्हें सालों से प्रतीक्षा थी वह चुपचाप उपस्थित हो गया। हो सकता है पार्टी अब कुछ व्यक्तियों की तानाशाही का खंडहर बनने से बच जाए।

संसद का चेहरा अब बदल जाना चाहिये! वे जो स्पीकर महोदय लोकसभा में, जो माननीय सभापति (और उपसभापति) राज्यसभा में और जो न्यायपालिका सुप्रीम कोर्ट में विराजमान हैं सबके संज्ञान में आया होगा कि मुल्क की असली ताक़त किन काँकरोचों के हाथों में है।

जंतर मंतर पर छात्रों की जीत उन मासूम बच्चों के प्रति श्रद्धांजलि है जिन्हें

यह घटिया खेल इस तानाशाही भाजपा सरकार ने शुरू किया है। आज़ादी के बाद पहली बार इस देश में ऐसी गंदी पॉलिटिक्स शुरू हुई है। BkP सरकार ने इस नकली 'इ' में गुंडों को यूनिफ़ॉर्म तो दे दी, लेकिन उन्हें अपने नाम और टाइटल वाली नेमप्लेट लगाने से सख्त मना कर दिया है और यह हमारे लिए फायदेमंद है।

मैं भगतवादियों से कहना चाहता हूँ कि अगर आपको कभी ऐसे बच्चे बिना नेमप्लेट वाली यूनिफ़ॉर्म में दिखें, तो सबसे पहले उन्हें कुचल दें क्योंकि BkP ने उनका कोई रिकॉर्ड नहीं रखा है। वे बिना बच्चों की नाजायज़ औलाद हैं जो BkP सरकार के ऑर्डर पर 700/800 रुपये में काम कर रहे हैं।

ये वर्कर नहीं, बल्कि सब गुंडे हैं। हां, अगर ऐसे बिना नेमप्लेट वाले गुंडे हमारे मार्च में दिखें, तो जय भगत वालों को उनकी ठीक से मेहमाननवाज़ी करनी चाहिए। कल जब उद्धव और राज ठाकरे ने जॉइंट प्रेस कॉन्फ्रेंस की, तो उन्होंने भी इस घटना का उदाहरण दिया और कहा कि अगर सरकार 26 तारीख को मार्च में दिल्ली जैसे हालात बनाती है, तो हम उसे वैसा ही जवाब देंगे।

तो भगतवादियों को भी इन यूनिफ़ॉर्म वाले गुंडों से डरने की कोई वजह नहीं है, बल्कि उन्हें ढूँढकर उनका स्वागत करना चाहिए।

सरकार की भ्रष्ट शिक्षा व्यवस्था के कारण आत्महत्याएँ करना पड़ीं। उन किसानों के प्रति सम्मान की अभिव्यक्ति है जिन्हें काले कृषि क़ानूनों के विरोध में बलिदान देना पड़ा।

जंतर मंतर का खाली हो जाना कोई गारंटी नहीं कि सारे आंदोलन अब खत्म हो गए हैं। जो आंदोलन मुल्क के अलग-अलग कोनों में चल रहे हैं उन्हें अब एक नई आवाज़ और साहस मिल गया है! जो मुल्क सड़कों पर उतर आया है वह घरों को वापस लौटने वाला नहीं है। लौटना तो अपनी बैरकों में पुलिस के उन जवानों को होगा जो हुकूमत को बचाने के लिए मासूम बच्चों और निर्दोष नागरिकों पर लाठियाँ चलाते हैं, अश्रु गैस के गोले फोड़ते हैं और पेलेट गनों का इस्तेमाल करते हैं।

जंतर मंतर का आंदोलन तो उस ब्लॉक बस्टर साबित होने वाली फिल्म का सिर्फ़ ट्रेलर मात्र है जिसे सरकार के सेंसर बोर्ड ने खौफ़ के डिब्बों में बंद करके रखा हुआ था और जो अपने आप रिलीज़ हो गई। जो बच्चे जंतर मंतर खाली करके रवाना हुए हैं हो सकता है उनके दिल रास्तों पर पड़ने वाले किसी और आंदोलन पर आ जाएँ!

(साभार)

**नमाज कायम करें
जकात देते रहें**

ऑल महाराष्ट्र मेवाती उलेमा, डॉक्टर, शिक्षक, राजनीतिक एवं सामाजिक नेतृत्व के नाम

मेवाती समाज का उद्देश्य, मिशन और विज़न

निश्चय ही अल्लाह किसी कौम की हालत नहीं बदलता, जब तक वह स्वयं अपने भीतर परिवर्तन न लाए।

(सूरह अर-रअद : 11)

यही आयत हमारे मिशन की बुनियाद है। आत्म-सुधार, आत्म-जागरूकता और सामूहिक परिवर्तन ही समाज की उन्नति का मार्ग है।

हमारा उद्देश्य (Purposes)

मेवाती समाज को दीन, शिक्षा, नैतिकता, चरित्र, सामाजिक जीवन और सेवा के प्रत्येक क्षेत्र में सशक्त बनाना, ताकि यह समाज ईमान, ज्ञान, चरित्र और एकता के आधार पर महाराष्ट्र की एक आदर्श एवं प्रगतिशील कौम बन सके।

हमारा मिशन (Mission)

1. धार्मिक जागरूकता
 - हर घर तक कुरआन और सुन्नत की सही शिक्षा पहुँचाना।
 - नमाज़ की पाबंदी और मस्जिद से जुड़ाव बढ़ाना।
 - प्रत्येक बस्ती में मकतबों को मजबूत और व्यवस्थित बनाना।

- बच्चों और युवाओं में दीन की समझ विकसित करना।

2. शैक्षिक जागरूकता

- दीनी और आधुनिक शिक्षा दोनों को बढ़ावा देना।

- बच्चों और युवाओं को स्कूल, कॉलेज और उच्च शिक्षा के लिए प्रेरित करना।

- समाज में आलिम, हाफिज़, डॉक्टर, इंजीनियर, शिक्षक, वकील, अधिकारी और सामाजिक नेतृत्व तैयार करना।

- छात्रवृत्ति, करियर मार्गदर्शन और शैक्षिक सहायता उपलब्ध कराना।

3. नैतिक एवं चरित्र निर्माण

- सिरत-ए-नबी? के अनुसार श्रेष्ठ चरित्र का निर्माण।

- युवाओं को नशे, अपराध और बुरी आदतों से बचाना।

- ईमानदारी, सच्चाई, अमानतदारी और अच्छे आचरण को बढ़ावा देना।

- परिवारों में प्रेम, सम्मान और सहयोग का वातावरण बनाना।

4. सामाजिक सुधार

- सादगीपूर्ण विवाह को प्रोत्साहित करना।

- दहेज, फिजूलखर्ची, सूद और सामाजिक बुराइयों का विरोध।

- पारिवारिक विवादों में सही मार्गदर्शन देना।

- मस्जिदों को इबादत के साथ-साथ शिक्षा और समाज सुधार का केंद्र बनाना।



5. सेवा एवं कल्याण

- गरीबों, यतीमों, विधवाओं और ज़रूरतमंदों की संगठित सहायता।

- रोज़गार और कौशल विकास को बढ़ावा देना।

- राशन, चिकित्सा सहायता, छात्रवृत्ति और सामाजिक सेवा की योजनाओं को व्यवस्थित रूप से चलाना।

हमारा विज़न (Vision)

हम ऐसा मेवाती समाज बनाना चाहते हैं-

- जो ईमान में मजबूत हो।
- जो शिक्षा में अग्रणी हो।
- जिसके हर मोहल्ले में मस्जिद और मकतब सक्रिय हों।
- जिसका हर युवा शिक्षित, संस्कारी और ज़िम्मेदार हो।
- जिसके हर घर में कुरआन, ज्ञान और अच्छे संस्कारों की रोशनी हो।
- जो महाराष्ट्र में एक आदर्श, शिक्षित और संगठित समाज के रूप में पहचाना जाए।

कार्य योजना (Action Plan)

- प्रत्येक गाँव में ठमस्जिद वन मूवमेंट प्रारम्भ करना।
- 40 दिन नमाज़ अभियान चलाना।
- बच्चों को नमाज़ सिखाने का विशेष अभियान।
- मकतबों का संगठन, सुधार और विस्तार।
- सामूहिक सम्मेलन, सेमिनार और प्रशिक्षण कार्यक्रम।
- युवाओं के लिए कैंप, कार्यशाला और मार्गदर्शन सत्र।

- शिक्षा, छात्रवृत्ति और करियर मार्गदर्शन अभियान।

- समाज सेवा के कार्यों को संस्थागत रूप देना।

उलेमा, बुद्धिजीवियों एवं सामाजिक नेतृत्व की जिम्मेदारियाँ

- समाज में एकता और भाईचारा स्थापित करना।

- धार्मिक मामलों में संतुलित और सही मार्गदर्शन देना।

- युवाओं की वैचारिक, नैतिक और शैक्षिक उन्नति के लिए कार्य करना।

- शिक्षा, सेवा, सुधार और समाज निर्माण के लिए मिलकर कार्य करना।

हमारा संकल्प

हर घर में कुरआन □ हर बच्चा शिक्षित □ हर युवा संस्कारी □ हर मोहल्ले में मकतब □ हर मस्जिद समाज सुधार का केंद्र □ और हर मेवाती परिवार प्रगति, एकता और खुशहाली की राह पर आगे बढ़े।

अल्लाह तआला हमें इस महान मिशन को ईमानदारी, एकता और समर्पण के साथ पूरा करने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए। آمीन।

हिफ़ज़-ए-कुरान ने एक बार फिर इतिहास रच दिया

बीदर: दीन और दुनियावी तालीम के खूबसूरत संगम की एक और रौशन मिसाल पेश करते हुए शाहीन ग्रुप ऑफ़ इंस्टीट्यूशन्स, बीदर के 22 हाफिज़ और हाफिज़ात-ए-कुरान ने 22 अगस्त 2026 में शानदार कामयाबी हासिल करके साबित कर दिया कि कुरान-ए-करीम की तालीम और आधुनिक वैज्ञानिक इल्म के साथ-साथ हासिल किए जा सकते हैं। इन सब की कामयाबी ने एक बार फिर यह पैगाम दिया है कि मेहनत, लगन, सही रहनुमाई और अल्लाह तआला पर तवक्कुल के साथ हर मंज़िल हासिल की जा सकती है।

संस्था की तरफ से जारी की गई सूची के अनुसार कामयाब हाफिज़ और हाफिज़ात की जानकारी इस प्रकार है:

- हाफिज़ मोहम्मद ऐजाज़ आलम — 593/720
- हाफिज़ आतिफ़ फ़ैयाज़ — 586/720
- हाफिज़ ज़क़वान ज़िया — 586/720
- हाफिज़ फ़रहान खान — 584/720
- हाफिज़ सईद अहमद — 575/720
- हाफिज़ यूसुफ़ खान — 570/720
- हाफिज़ हनीफ़ बदर — 559/720
- हाफिज़ अब्दुल्लाह — 551/720
- हाफिज़ मोहम्मद नासिर — 548/720
- हाफिज़ अरसलान अब्दुस्सलाम — 548/720
- हाफिज़ मोहम्मद अनस — 546/720
- हाफिज़ अहमद अम्मार — 541/720
- हाफिज़ शम्स अल — 539/720
- हाफिज़ा नाज़िया खातून — 536/720

- हाफिज़ मोहम्मद साद — 534/720
- हाफिज़ा उम्म-ए-हबीबा — 525/720
- हाफिज़ अब्दुल्लाह शेख — 522/720
- हाफिज़ मोहम्मद ऐजाज़ — 521/720
- हाफिज़ हंज़ला — 519/720
- हाफिज़ पी. अनीस इलियास — 504/720
- हाफिज़ अज़ूद अकबर — 503/720
- हाफिज़ मोहम्मद साजिद — 500/720

ये सभी छात्र और छात्राएं हाफिज़-ए-कुरान हैं, जिन्होंने हिफ़ज़-ए-कुरान की सआदत हासिल करने के बाद देश के सबसे बड़े मेडिकल प्रवेश परीक्षा 22 अगस्त 2026 में भी शानदार कामयाबी हासिल की। इनका ये शानदार प्रदर्शन इस बात का साफ़ सबूत है कि दीन की तालीम और आधुनिक तालीम एक-दूसरे की विरोधी नहीं बल्कि एक-दूसरे की पूरक हैं।

शिक्षा विशेषज्ञों के मुताबिक ऐसे नतीजे नौजवान नस्ल के लिए एक हौसला-अफ़ज़ा मिसाल हैं, जो ये साबित करते हैं कि सुनियोजित योजना, लगातार मेहनत, उस्तादों की रहनुमाई और माता-पिता की दुआओं से बड़े से बड़ा लक्ष्य हासिल किया जा सकता है। इस अज़ीम कामयाबी पर शाहीन ग्रुप ऑफ़ इंस्टीट्यूशन्स, सभी हाफिज़ और हाफिज़ात, उनके माता-पिता, उस्तादों और ख़ैर-ख़्वाहों को मुबारकबाद पेश की जा रही है। दुआ है कि अल्लाह तआला इन सभी छात्र-छात्राओं को और कामयाबियाँ अता फ़रमाए, उन्हें बेहतरीन डॉक्टर बनाए और इंसानियत की खिदमत की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए।



पंचायत कमेटीयों का भौतिक सत्यापन संगठन को मजबूत करने पर हुआ मंथन

मंदसौर प्रदेश कांग्रेस कमेटी के निर्देशानुसार एवं जिला कांग्रेस कमेटी मंदसौर के मार्गदर्शन में ग्रामीण ब्लॉक कांग्रेस कमेटी मंदसौर द्वारा राजा खेड़ी मंडलम भालोट मंडलम की की पंचायत कांग्रेस कमेटीयों के भौतिक सत्यापन के लिए बैठक आयोजित की गई

बैठक में ब्लॉक कांग्रेस कमेटी के प्रभारी श्री मोहम्मद युनुस मेव बसंती लाल जी कुमावत ब्लॉक अध्यक्ष विकास जी दशोरा मंडलम अध्यक्षगण श्याम जी सालवी रविंद्र कुमावत की उपस्थिति में राजाखेड़ी मंडलम भालोट मंडलम की ग्राम पंचायत कांग्रेस कमेटीयों के अध्यक्षों तथा समस्त पदाधिकारियों के साथ संगठनात्मक समीक्षा की इस दौरान

पंचायत कमेटीयों का भौतिक सत्यापन किया तथा संगठन को बोथ स्तर तक और अधिक मजबूत बनाने सकरी कार्यकर्ताओं को जिम्मेदारियाँ सौंपने एवं आगामी संगठनात्मक गतिविधियों को लेकर विस्तार से चर्चा की।

पार्षद हुसैन, ने अपने वालिद कि याद मे बोरिंग कराया

नागदा। चेतनपुरा स्थित गुलशने मुस्तूफा मस्जिद मे क्षेत्रीय पार्षद आसिफ हुसैन ने अपने मरहु म वालिद अख्तर हुसैन साहब कि याद मे एक बोरिंग कराया, जिसका वादा उन्होंने रमजान मे किया था, वजू और मोहल्ले मे पानी कि बहुत किल्लत थी. बोरिंग मे हालाँकि पानी नब्बे फिट पर निकल आया, लेकिन उसे 130, फिट गहरा कराया ताकि आगे कोई तकलीफ न आए. मस्जिद के हाफिज ने संस्कृत मे पार्षद कि तारीफ करते हुए उनका शुक्रिया अदा किया, साथ ही सदर अय्यूब मेव ने मोहल्ले और मस्जिद कमेटी, नमाजियो कि और से आसिफ हुसैन के काम कि तारीफ करते हुए, शुक्रिया अदा किया.

रामनवमी हिंसा के मामले में मण्डलेश्वर की सत्र अदालत ने सभी 11 मुस्लिम आरोपी बरी

खरगोन। मध्य प्रदेश के खरगोन में साल 2022 में हुई रामनवमी हिंसा के मामले में मण्डलेश्वर की सत्र अदालत ने सभी 11 मुस्लिम आरोपियों को बरी कर दिया है. अदालत ने अपने फैसले में कहा कि अभियोजन पक्ष आरोपियों के खिलाफ लगे आरोपों को संदेह से परे साबित करने में पूरी तरह नाकाम रहा. आरोपियों को कानूनी सहायता प्रदान करने वाले संगठन 'एप्सोसिएशन फॉर प्रोटेक्शन ऑफ सिविल राइट्स' (APCR) के अनुसार, बरी किए गए लोगों को इस मामले में 462 से लेकर 827 दिनों तक जेल में बिताना पड़ा.



पेपर लीक, महंगी शिक्षा और टूटता भरोसा

आखिर युवाओं का आक्रोश कब तक दबाया जाएगा?

देश में शिक्षा व्यवस्था और प्रतियोगी परीक्षाओं को लेकर युवाओं में जो आक्रोश दिखाई दे रहा है, वह अचानक पैदा नहीं हुआ है। यह वर्षों से जमा होती निराशा, सीमित सरकारी अवसरों, महंगी निजी शिक्षा, बेरोजगारी, परीक्षाओं में देरी, पेपर लीक और दोषियों पर समय से कार्रवाई न होने का परिणाम है।

आज देश का विद्यार्थी दिन-रात मेहनत करता है। उसके माता-पिता अपनी जरूरतों में कटौती करके बच्चों की पढ़ाई, कोचिंग, किताबों, किराये और परीक्षा शुल्क का खर्च उठाते हैं। कई परिवार जमीन, गहने या बचत तक दांव पर लगा देते हैं, क्योंकि उन्हें विश्वास होता है कि ईमानदार मेहनत से उनका बच्चा आगे बढ़ सकेगा।

लेकिन जब परीक्षा से पहले प्रश्नपत्र लीक हो जाए, भर्ती वर्षों तक अटक जाए या परीक्षा की निष्पक्षता पर सवाल उठ जाए, तब केवल एक परीक्षा प्रभावित नहीं होती। एक विद्यार्थी की मेहनत, उसके परिवार की कमाई और पूरी व्यवस्था पर उसका विश्वास टूट जाता है।

2014 के बाद सामने आए पेपर लीक

उपलब्ध मीडिया अध्ययनों के अनुसार वर्ष 2014 से 2024 के बीच कम-से-कम 89 पेपर लीक के मामले सार्वजनिक रूप से सामने आए। इन मामलों से करोड़ों अभ्यर्थी प्रभावित हुए और कई परीक्षाएं रद्द करके दोबारा करानी पड़ीं।

लेकिन क्या यह संख्या पूरी सच्चाई है?

यह केवल उन मामलों की संख्या है, जो पकड़े गए, जिनकी शिकायत हुई, जिनमें प्राथमिकी दर्ज की गई, परीक्षा रद्द हुई या मामला मीडिया तक पहुंचा। इसका अर्थ यह नहीं कि केवल इतने ही पेपर लीक हुए।

इसे एक साधारण उदाहरण से समझा जा सकता है। हमारे शहरों और कस्बों में प्रतिदिन न जाने कितने लोग बिना हेलमेट के दोपहिया वाहन चलाते हैं। क्या उन सभी का चालान कटता है? शायद पांच प्रतिशत लोगों का ही चालान हो पाता है। सरकारी रिकॉर्ड में वही संख्या दर्ज होती है, जिनका चालान हुआ, जबकि नियम तोड़ने वालों की वास्तविक संख्या उससे कहीं अधिक होती है।

पेपर लीक के मामलों में भी यही स्थिति हो सकती है।

जितने पेपर लीक पकड़े गए, केवल वही हमारे सामने हैं। न जाने कितनी परीक्षाओं में कुछ लोगों को पहले से प्रश्नपत्र मिल गया हो, लेकिन कोई गिरोह पकड़ा न गया हो। संभव है कि कुछ अभ्यर्थी अनुचित लाभ लेकर नौकरी या प्रवेश पा गए हों और किसी को इसकी जानकारी तक न हुई हो।

कई छोटी और स्थानीय परीक्षाओं के मामलों को सामान्य नकल बताकर बंद कर दिया जाता है। कहीं प्रशासनिक दबाव होता है, कहीं प्रभावशाली लोगों के कारण जांच आगे नहीं बढ़ती और कहीं विद्यार्थी यह साबित ही नहीं कर पाता कि उसके साथ धोखा हुआ है। इसलिए सामने आए 89 मामलों को अंतिम संख्या नहीं, बल्कि सार्वजनिक रूप से दर्ज न्यूनतम संख्या माना जाना चाहिए। साथ ही यह भी जरूरी है कि बिना प्रमाण किसी परीक्षा को लीक घोषित न किया जाए। संदेह की निष्पक्ष जांच हो और प्रमाण मिलने पर दोषियों को कठोर सजा दी जाए।

विद्यार्थी आंदोलन क्यों कर रहे हैं?

किसी प्रतियोगी परीक्षा की तैयारी केवल किताब पढ़ने तक सीमित नहीं होती। विद्यार्थी कई वर्षों तक अपनी सामाजिक जिंदगी, आराम और दूसरे अवसर छोड़ देता है। उसके साथ पूरा परिवार संघर्ष करता है।

जब उसे पता चलता है कि जिस परीक्षा के लिए उसने वर्षों मेहनत की, उसी का पेपर कुछ लोगों के पास पहले से मौजूद था, तो वह स्वयं को ठगा हुआ महसूस करता है।

एक ओर ईमानदारी से तैयारी करने वाला विद्यार्थी है और दूसरी ओर पैसे, संपर्क या संगठित गिरोह के माध्यम से प्रश्नपत्र प्राप्त करने वाला व्यक्ति। ऐसी स्थिति में योग्यता, समान अवसर और मेरिट का अर्थ समाप्त हो जाता है।

यही पीड़ा आंदोलन में बदलती है।

यह आंदोलन केवल किसी एक परीक्षा या एक मंत्री के खिलाफ नहीं है। यह उस पूरी व्यवस्था के विरुद्ध नाराजगी है, जिसमें युवा बार-बार परीक्षा देता है, फीस भरता है, यात्रा करता है, परिणाम का इंतजार करता है और अंत में उसे पता चलता है कि परीक्षा ही निष्पक्ष नहीं थी।

आंदोलन क्यों भड़कता है?

किसी आंदोलन को केवल मूल समस्या नहीं भड़काती। सरकार और प्रशासन की प्रतिक्रिया भी यह तय करती है कि मामला शांत होगा या और अधिक व्यापक बनेगा।

विद्यार्थियों को उम्मीद रहती है कि सरकार उनकी बात सुनेगी, समयबद्ध जांच कराएगी, दोषियों पर कार्रवाई करेगी और प्रभावित छात्रों को राहत देगी।

लेकिन जब जवाब के स्थान पर चुप्पी, टालमटोल, अस्पष्ट बयान या पुलिस कार्रवाई दिखाई देती है, तो आक्रोश बढ़ता है।

छात्र पूछते हैं

1. प्रश्नपत्र की सुरक्षा की जिम्मेदारी किसकी थी?
2. परीक्षा एजेंसी की निगरानी कौन कर रहा था?
3. वरिष्ठ अधिकारियों की जवाबदेही क्यों तय नहीं हुई?
4. हर मामले में छोटे कर्मचारियों, बिचौलियों या कुछ अभ्यर्थियों को पकड़कर मामला समाप्त क्यों कर दिया जाता है?

जांच रिपोर्ट सार्वजनिक क्यों नहीं की जाती?

इन प्रश्नों के स्पष्ट उत्तर न मिलने पर परीक्षा की गड़बड़ी का मामला पूरी व्यवस्था की जवाबदेही के प्रश्न में बदल जाता है।

धर्मेन्द्र प्रधान से सवाल क्यों पूछे जा रहे हैं?

यह सही है कि केंद्रीय शिक्षा मंत्री स्वयं प्रश्नपत्र तैयार या वितरित नहीं करते। लेकिन मंत्रालय के अधीन काम करने वाली संस्थाओं, राष्ट्रीय परीक्षा व्यवस्था और उसकी विश्वसनीयता की राजनीतिक जिम्मेदारी मंत्रालय के नेतृत्व पर होती है।

मंत्री पद केवल उपलब्धियों का श्रेय लेने का पद नहीं है। वह विफलताओं की जिम्मेदारी स्वीकार करने का पद भी है।

जब लाखों विद्यार्थियों का भविष्य प्रभावित हो, परीक्षाएं रद्द हों, भर्ती वर्षों तक लटकी रहे और दोषियों को सजा मिलने में लंबा समय लगे, तो युवा यह पूछने का अधिकार रखते हैं कि शीर्ष स्तर पर जवाबदेही किसकी है।

धर्मेन्द्र प्रधान से इस्तीफे या जवाबदेही की मांग को केवल व्यक्तिगत विरोध के रूप में नहीं देखा जाना चाहिए। यह उस लोकतांत्रिक सिद्धांत का प्रश्न है, जिसमें व्यवस्था की बड़ी विफलता पर जिम्मेदार नेतृत्व को जनता के सामने जवाब देना होता है।

क्या सरकारी सीटें युवाओं की संख्या के अनुपात में बहीं?

पेपर लीक के साथ एक बड़ा प्रश्न यह भी है कि वर्ष 2014 के बाद विद्यार्थियों की संख्या जितनी तेजी से बढ़ी, क्या उसी अनुपात में सस्ती और सरकार द्वारा वित्तपोषित सीटें भी बढ़ाई गईं?

सभी पाठ्यक्रमों—कला, विज्ञान, वाणिज्य, मेडिकल, इंजीनियरिंग, कानून, प्रबंधन, नर्सिंग, फार्मेसी और अन्य व्यावसायिक पाठ्यक्रमों—की सरकारी सीटों का कोई एक समेकित और सार्वजनिक राष्ट्रीय आंकड़ा उपलब्ध नहीं है।

सरकारी रिपोर्टें आमतौर पर संस्थानों की संख्या और कुल नामांकन बताती हैं, लेकिन देशभर में सभी पाठ्यक्रमों की सरकार द्वारा वित्तपोषित स्वीकृत सीटों का एक स्पष्ट कुल आंकड़ा जारी नहीं किया जाता।

यही अपने आप में एक गंभीर कमी है।

उपलब्ध उच्च शिक्षा आंकड़ों के अनुसार वर्ष 2014-15 में उच्च शिक्षा में लगभग 3.42 करोड़ विद्यार्थी नामांकित थे। वर्ष 2023-24 तक यह संख्या बढ़कर लगभग 4.50 करोड़ हो गई। यानी उच्च शिक्षा में विद्यार्थियों की संख्या में करीब 1.08 करोड़ की वृद्धि हुई।

लेकिन यह पूरी वृद्धि सरकारी सीटों में नहीं हुई। इसमें सरकारी, सहायता प्राप्त, निजी विश्वविद्यालय, निजी कॉलेज, दूरस्थ शिक्षा और अन्य संस्थान सभी शामिल हैं।

इसलिए कुल नामांकन बढ़ने को सरकारी सीटों की वृद्धि नहीं माना जा सकता।

विश्वविद्यालय बढ़े, लेकिन निजी संस्थानों की रफ्तार तेज रही वर्ष 2014-15 में देश में लगभग 760 विश्वविद्यालय और विश्वविद्यालय स्तर के संस्थान दर्ज थे। वर्ष 2023-24 तक इनकी संख्या बढ़कर करीब 1,289 हो गई।

यह वृद्धि देखने में बड़ी उपलब्धि लगती है। लेकिन यह भी देखना होगा कि इनमें कितने संस्थान सरकारी हैं और कितने निजी।

वर्ष 2014-15 में राज्य निजी विश्वविद्यालयों और निजी डीम्ड विश्वविद्यालयों को मिलाकर लगभग 260 निजी विश्वविद्यालय स्तर के संस्थान थे। वर्ष 2023-24 तक निजी विश्वविद्यालय स्तर के संस्थानों की संख्या लगभग 556 तक पहुंच गई।

केवल राज्य निजी विश्वविद्यालयों की संख्या देखें तो यह लगभग 181 से बढ़कर 464 तक पहुंची। यानी निजी विश्वविद्यालयों का

विस्तार बहुत तेजी से हुआ।

दूसरी ओर सरकारी विश्वविद्यालयों में भी वृद्धि हुई, लेकिन निजी विश्वविद्यालयों की बढ़ोतरी की रफ्तार अधिक रही।

कॉलेजों की संख्या बढ़ी, लेकिन अधिकांश निजी हैं

वर्ष 2014-15 में देश में लगभग 38,498 कॉलेज दर्ज थे।

वर्ष 2023-24 तक यह संख्या बढ़कर करीब 48,246 हो गई। यानी लगभग 9,748 कॉलेजों की वृद्धि हुई।

लेकिन वर्तमान व्यवस्था में लगभग 83 प्रतिशत कॉलेज निजी प्रबंधन के अंतर्गत बताए जाते हैं, जबकि सरकारी कॉलेजों की हिस्सेदारी करीब 17 प्रतिशत के आसपास है।

डायर आंकड़ा कई गंभीर प्रश्न खड़े करता है।

निजी संस्थान होना अपने आप में गलत नहीं है। अनेक निजी संस्थान गुणवत्तापूर्ण शिक्षा देते हैं। समस्या तब होती है, जब सरकारी और सस्ती शिक्षा के पर्याप्त विकल्प न हों और विद्यार्थी को मजबूरी में महंगी निजी फीस चुकानी पड़े।

कॉलेज या विश्वविद्यालय का खुलना और गरीब विद्यार्थी के लिए शिक्षा का सुलभ होना एक ही बात नहीं है।

यदि किसी पाठ्यक्रम की निजी फीस लाखों रुपये हो और सरकारी सीटें सीमित हों, तो आर्थिक रूप से कमजोर लेकिन योग्य विद्यार्थी के सामने अवसर स्वतः कम हो जाते हैं।

सीमित सरकारी सीटें और अत्यधिक प्रतिस्पर्धा

सरकारी सीटें और सरकारी नौकरियां सीमित होने के कारण एक-एक परीक्षा में लाखों विद्यार्थी आवेदन करते हैं।

जब लाखों विद्यार्थी कुछ हजार सीटों के लिए प्रतियोगिता करते हैं, तो प्रत्येक परीक्षा उनके जीवन का निर्णायक अवसर बन जाती है।

ऐसे में यदि पेपर लीक हो जाए, तो वह केवल प्रशासनिक चूक नहीं रहती। वह विद्यार्थी के सीमित अवसर की चोरी बन जाती है।

एक ओर सरकार विश्वविद्यालयों, कॉलेजों और नामांकन में वृद्धि का दावा करती है, दूसरी ओर उच्च शिक्षा का बड़ा हिस्सा निजी संस्थानों के हाथों में है। इससे यह सवाल उठता है कि क्या सस्ती सरकारी शिक्षा का विस्तार युवाओं की बढ़ती संख्या और जरूरत के अनुपात में हुआ?

देश को नए विश्वविद्यालयों की आवश्यकता है, लेकिन केवल महंगे निजी विश्वविद्यालयों की नहीं।

हर जिले और पिछड़े क्षेत्र में पर्याप्त सरकारी कॉलेज, प्रशिक्षित शिक्षक, छात्रावास, प्रयोगशालाएं, पुस्तकालय और कम फीस वाली सीटें भी होनी चाहिए।

व्यवस्था को किस तरह खोखला किया गया?

आज हमारे पास मंत्रालय है, परीक्षा एजेंसियां हैं, पुलिस है, जांच समितियां हैं, अदालतें हैं और शिकायत पोर्टल भी हैं। लेकिन फिर भी विद्यार्थी को समय पर न्याय नहीं मिलता।

यही व्यवस्था का संस्थागत खोखलापन है।

परीक्षा एजेंसी कहती है कि जांच चल रही है।

मंत्रालय कहता है कि दोषियों को छोड़ा नहीं जाएगा।

पुलिस कुछ लोगों को गिरफ्तार करती है।

समिति भविष्य में सुधार की सिफारिश करती है।

मुकदमा अदालत में वर्षों चलता रहता है।

लेकिन विद्यार्थी का मूल प्रश्न वहीं रह जाता है—उसका समय, पैसा और अवसर कौन लौटाएगा?

व्यवस्था में जिम्मेदारी इस तरह बांट दी जाती है कि अंत में कोई भी व्यक्ति स्वयं को उत्तरदायी नहीं मानता।

घटना के बाद सभी सक्रिय दिखाई देते हैं, लेकिन घटना रोकने और समय पर न्याय दिलाने की स्पष्ट जिम्मेदारी किसी की नहीं होती।

प्रशासन कहां विफल होता है?

1. प्रशासन की पहली विफलता प्रश्नपत्र की सुरक्षा में होती है। प्रश्नपत्र तैयार होने से लेकर छपाई, परिवहन, डिजिटल एक्सेस और परीक्षा केंद्र तक प्रत्येक चरण की निगरानी और जवाबदेही तय होनी चाहिए।

2. दूसरी विफलता समय पर सच्चाई सामने न रखने में होती है। गड़बड़ी का संदेह सामने आते ही सरकार को तथ्य सार्वजनिक करने चाहिए।

3. तीसरी विफलता स्वतंत्र जांच की कमी है। जिस संस्था पर आरोप हो, केवल उसी संस्था द्वारा की गई आंतरिक जांच पर्याप्त नहीं मानी जा सकती।

(शेष पेज 5 पर)

आखिर युवाओं का आक्रोश...

4. चौथी विफलता वरिष्ठ अधिकारियों की जिम्मेदारी तय न करना है। केवल छोटे कर्मचारियों और बिचौलियों को पकड़ लेने से पूरी व्यवस्था साफ नहीं हो जाती।

5. पांचवीं विफलता न्याय की धीमी प्रक्रिया है। जब मुकदमे वर्षों तक चलते हैं, तो अपराधियों के मन से कानून का भय समाप्त होने लगता है।

6. छठी विफलता छात्रों से संवाद न करना है। विद्यार्थियों की शिकायतों को राजनीति या षड्यंत्र कहकर खारिज करना समस्या का समाधान नहीं है।

आंदोलन कैसे रोका जा सकता था?

यह आंदोलन व्यापक होने से पहले संभाला जा सकता था।

1. पेपर लीक का संदेह सामने आते ही स्वतंत्र, निष्पक्ष और समयबद्ध जांच की घोषणा होनी चाहिए थी।

2. जिम्मेदार अधिकारियों को जांच पूरी होने तक पद से अलग किया जाना चाहिए था।

3. प्रभावित विद्यार्थियों को फीस वापसी, पुनर्परीक्षा, आयु सीमा में राहत और अतिरिक्त अवसर दिया जाना चाहिए था।

4. शिक्षा मंत्री और वरिष्ठ अधिकारियों को विद्यार्थी प्रतिनिधियों, अभिभावकों और विशेषज्ञों के साथ खुली बैठक करनी चाहिए थी।

5. जांच की प्रगति को नियमित रूप से सार्वजनिक किया जाना चाहिए था।

6. पुलिस बल को अंतिम विकल्प रखा जाना चाहिए था। संवाद, संवेदनशीलता और समयबद्ध कार्रवाई से आंदोलन को शांत किया जा सकता था।

गलती स्वीकार करना सरकार की कमजोरी नहीं होता। यह लोकतांत्रिक ईमानदारी और मजबूत नेतृत्व का संकेत होता है।

अब क्या किया जाना चाहिए?

देश में एक सार्वजनिक राष्ट्रीय परीक्षा अपराध रजिस्टर बनाया जाना चाहिए।

इसमें प्रत्येक पेपर लीक या परीक्षा अनियमितता का नाम, आयोजन संस्था, प्रभावित अभ्यर्थियों की संख्या, प्राथमिकी, गिरफ्तारी, आरोपपत्र, पुनर्परीक्षा और अंतिम न्यायिक परिणाम दर्ज होना चाहिए।

इसी प्रकार एक राष्ट्रीय सार्वजनिक शिक्षा सीट रजिस्टर भी बनाया जाना चाहिए।

इसमें प्रत्येक पाठ्यक्रम की सरकारी, सरकारी सहायता प्राप्त और निजी सीटों की संख्या, फीस, खाली सीटें, प्रवेश और शिक्षकों के रिक्त पदों की जानकारी सार्वजनिक होनी चाहिए।

प्रश्नपत्र तैयार होने से परीक्षा केंद्र तक पूरी प्रक्रिया का डिजिटल ऑडिट ट्रेल बनाया जाए।

निजी प्रिंटिंग प्रेस, परीक्षा केंद्रों, एजेंसियों और संवेदनशील कर्मचारियों की सुरक्षा जांच अनिवार्य हो।

पेपर लीक के मामलों के लिए विशेष अदालतें बनाई जाएं, ताकि मुकदमों का फैसला निश्चित समय सीमा में हो सके।

परीक्षा एजेंसियों और शिक्षा मंत्रालय से स्वतंत्र राष्ट्रीय परीक्षा लोकपाल बनाया जाए, जहां विद्यार्थी शिकायत कर सकें।

परीक्षा रद्द होने पर विद्यार्थियों को केवल नई तारीख न दी जाए। उनके यात्रा खर्च, परीक्षा शुल्क और आर्थिक नुकसान की भी भरपाई होनी चाहिए।

सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि मंत्री से लेकर परीक्षा केंद्र तक प्रत्येक स्तर की जिम्मेदारी स्पष्ट हो।

वर्ष 2014 से 2024 के बीच सामने आए कम-से-कम 89 पेपर लीक केवल एक आंकड़ा नहीं हैं। इनके पीछे करोड़ों युवाओं की

मेहनत, माता-पिता की कमाई और परिवारों की उम्मीदें जुड़ी हुई हैं।

और संभव है कि यह संख्या उतनी ही हो, जितनी घटनाएं पकड़ी गई या सार्वजनिक हो सकीं।

जैसे बिना हेलमेट चलने वाले सभी लोगों का चालान नहीं कटता, उसी प्रकार हर पेपर लीक भी पकड़ा नहीं जाता। रिकॉर्ड में दर्ज संख्या समस्या की न्यूनतम सीमा दिखाती है, उसकी पूरी व्यापकता नहीं।

इसी अवधि में उच्च शिक्षा का विस्तार हुआ, विश्वविद्यालय और कॉलेज बढ़े, लेकिन निजी संस्थानों की संख्या अधिक तेजी से बढ़ी। कुल कॉलेजों में सरकारी कॉलेजों की हिस्सेदारी बहुत सीमित है।

ऐसे में युवाओं के सामने दोहरी चुनौती है। एक ओर सीमित सरकारी सीटों और नौकरियों के लिए अत्यधिक प्रतिस्पर्धा है और दूसरी ओर महंगी निजी शिक्षा का दबाव।

देश का युवा कोई एहसान नहीं मांग रहा। वह केवल यह चाहता है कि उसकी मेहनत पैसे, संपर्क, पेपर लीक और प्रशासनिक लापरवाही के सामने हार न जाए।

सरकार पुलिस बल से किसी दिन सड़क खाली करा सकती है, लेकिन युवाओं के मन में पैदा हुआ अविश्वास बल प्रयोग से समाप्त नहीं कर सकती।

विश्वास केवल सच्चाई, पारदर्शिता, सस्ती शिक्षा, निष्पक्ष परीक्षा और जवाबदेही से लौटेगा।

जिस देश की परीक्षा व्यवस्था और शिक्षा प्रणाली पर से युवाओं का भरोसा उठ जाए, वहां संकट केवल शिक्षा का नहीं रहता। वह शासन, लोकतंत्र और देश के भविष्य का संकट बन जाता है। (साभार)

RAKMA द्वारा किया गया बच्चों का सम्मान

राजस्थान अधिकारी कर्मचारी माईनोरिटी एशोसिएशन (RAKMA) डींग के जिलाध्यक्ष जनाब अख्तर अली के नेतृत्व में neet2026 क्वालीफाई करने वाले डींग जिले के समस्त मुस्लिम बच्चों को सम्मानित कर होंशला आफज़ाई कर मुबारकबाद पेश की। प्रत्येक बच्चे के घर पहुंचकर रकमा टीम ने बच्चों को माला, पगड़ी, शील्ड, तथा मिठाई खिलाकर सम्मानित किया गया।

सम्मानित होने वाले बच्चे-1. सोयल पुत्र श्री आजाद गाँव समधारा। 2. अरमान पुत्र श्री हाकम गाँव लाडलाका। 3. मोहम्मद अरमान पुत्र श्री अलीजान गाँव बिलंग। 4. मोहम्मद कैफ पुत्र श्री अय्यूब गाँव गढ़अजान। 5. मुस्कान पुत्री श्री इस्लाम गाँव गंगोरा। 6. अफरीदी पुत्र श्री इमरान गाँव सिहावली। 7. फैजान पुत्र श्री आमिर गाँव कैथवाडा। 8. रियाज गाँव घोसिना।

इस अवसर पर टीम रकमा जिला अध्यक्ष जनाब अख्तर अली बिरार, इब्रान खान प्राचार्य उभाका, तैयब हुसैन प्रिंसिपल जुरहेरा, मौसम खान अध्यापक लुहेसर, सोराब खान अध्यापक गांवडी, वकार अध्यापक सबलाना, सईद मोहम्मद अध्यापक बिलंग, अकरम खान अध्यापक बिलग, जमदीन अध्यापक बूडली, अंसार खान अध्यापक सिंगार, अब्बास अध्यापक khandwla, मुकीम अध्यापक भंडारा, ममनदीन अध्यापक बड़कली, सदाम नौगांवा तथा अनेक gramvasie मौजूद रहे।



उज्जैन। मेव बिरादरी के इशियाक खान मेव (राजू) एवं फरजाना बी के छोटे बेटे एवं मुश्ताक खान के पोते मोहम्मद फैजान खान मेव को नीट की परीक्षा में कामयाब होने पर तहेदिल से बहुत बहुत मुबारकबाद, अल्लाह ताला फैजान को दिन दुगुनी रात चौगुनी तरक्की अता फरमाए, सेहत अता फरमाए। न्यू मेव टाइम्स एवं मेव एजुकेशन वेलफेयर अवेयर ट्रस्ट इंदौर।

स्व. ज़ैतून खानम शिक्षा समिति इन्दौर के संस्थापक अध्यक्ष
मरहूम इब्राहीम खान मेव की स्मृति में

MEO

COACHING INSTITUTE

मेव एजुकेशनल वेलफेयर अवेयरनेस ट्रस्ट की योजना
एक बार पंजीयन शुल्क मात्र ₹2100 देकर
पूरे साल निःशुल्क शिक्षा की व्यवस्था रहेगी

सिर्फ
₹2100
(मात्र)

बेहतर शिक्षा
बेहतर परिणाम
बेहतर भविष्य

पंजीयन के बाद आपको निशुल्क प्राप्त होगा

आकर्षक कोचिंग वेग

2 - लांग कॉपीयाँ

गुणवत्तापूर्ण पेन

अन्य आवश्यक स्टेशनरी सामग्री

नियमित मासिक टेस्ट कॉपीयाँ

विशेष छात्रवृत्ति (Scholarship) योजना

"मेहनत करने वालों की कद्र करना ही हमारी पहचान है।"

- संस्थान द्वारा प्रत्येक वर्ष मेधावी विद्यार्थी चयन परीक्षा आयोजित की जाएगी।
- इस परीक्षा में कोचिंग संस्थान में अध्ययनरत विद्यार्थियों में से 25 मेधावी विद्यार्थियों का चयन किया जाएगा।
- इन 25 विद्यार्थियों के चयन हेतु उन्हीं बच्चों को पंजीकृत किया जा सकेगा जिन्होंने बोर्ड परीक्षाओं में 75% या इससे अधिक अंक अर्जित किये हों और इस कोचिंग संस्थान के अध्ययनरत विद्यार्थी हों।
- चयनित विद्यार्थियों को ₹1100 से ₹21000 तक की नगद पुरस्कार राशि सम्मानस्वरूप प्रदान की जाएगी।

विशेष सम्मान

यदि हमारे संस्थान का कोई विद्यार्थी मध्य प्रदेश राज्य बोर्ड परीक्षा की मेरिट सूची में स्थान प्राप्त करता है, तो उसे

₹51,000/- (इक्यावन हजार रुपये)

का विशेष नगद पुरस्कार

स्वर्गीय ज़ैतून खानम शिक्षा समिति के अध्यक्ष एवं जे. के. मेमोरियल कॉन्वेंट हायर सेकेंडरी स्कूल के संचालक **अब्दुल हफ़ीज़ मेव** के द्वारा सम्मानपूर्वक प्रदान किया जाएगा।

हमारा पैनाम

तालीम इंसान की सबसे बड़ी ज़ीनत है,
मेहनत उसकी सबसे बड़ी ताक़त और कामयाबी
उसका सबसे खूबसूरत इनाम।

हमारा मक़सद सिर्फ़ इस्तिहान में
कामयाबी दिलाना नहीं, बल्कि हर विद्यार्थी
को बेहतरीन इंसान, खुद एतमाद (आत्मविश्वास)
और रोशन मुस्तक़बिल का मालिक बनाना है।

हमारी विशेषताएँ

अनुभवी, योग्य एवं उच्च शिक्षित शिक्षकों द्वारा गुणवत्तापूर्ण शिक्षा

नियमित मासिक टेस्ट एवं सतत मूल्यांकन (Continuous Assessment)

बोर्ड परीक्षा पैटर्न पर आधारित विशेष तैयारी

प्रत्येक विद्यार्थी पर व्यक्तिगत ध्यान

NCERT आधारित अध्ययन सामग्री एवं कॉन्सेप्ट क्लारासेस

बोर्ड परीक्षाओं में उत्कृष्ट परिणाम हेतु विशेष मार्गदर्शन

विद्यार्थियों को विभिन्न मेधावी विद्यार्थी योजनाओं का लाभ दिलाने हेतु समुचित तैयारी

₹1100 से ₹21000-

नगद पुरस्कार राशि

आज ही अपना पंजीयन कराएँ !

सीमित सीटें पहले आओ, पहले पाओ

कैम्पस - जे.के. मेमोरियल कॉन्वेंट हायर सेकेंडरी स्कूल
पता - 150-151 सुमति नगर (मदीना नगर), इंदौर

संपर्क करें :

0731-4280621
9977403674

मेव एजुकेशनल वेलफेयर अवेयरनेस ट्रस्ट की योजना

आज की रोचक कहानीयां

पता नहीं आज बेटे ने कौन सी शरारत कर दी प्रिंसिपल ने अचानक एक माँ को स्कूल बुलाकर कहा-आपके बेटे ने आज 'अगर मेरी माँ एक दिन के लिए छुट्टी पर चली जाए' विषय पर ऐसा निबंध लिखा है कि पूरी स्टाफ रूम में सन्नाटा छा गया। पहले सब हँस रहे थे... फिर सब रोने लगे।

माँ घबराकर कुर्सी पर बैठ गई। उसे लगा, पता नहीं बेटे ने कौन-सी शरारत कर दी होगी।

प्रिंसिपल ने मुस्कुराते हुए कॉपी उसकी ओर बढ़ाई और कहा, इसे घर जाकर मत पढ़िए... यहीं पढ़ लीजिए।

कॉपी के पहले पन्ने पर लिखा था- अगर मेरी माँ एक दिन के लिए छुट्टी पर चली जाए...

पहले मुझे लगता था कि मेरी माँ दुनिया की सबसे गुस्सैल औरत है।

सुबह पाँच बजे उठाकर पढ़ाई कराती है। टिफिन पूरा खत्म नहीं करूँ तो डाँटती है। देर तक मोबाइल चलाऊँ तो छीन लेती है। छुट्टी के दिन भी कहती है-कमरा साफ़ करो।

मुझे लगता था कि काश... मेरी माँ एक दिन के लिए कहीं चली जाए।

फिर पिछले सोमवार मेरी माँ बीमार पड़ गई। डॉक्टर ने उन्हें पूरा आराम करने को कहा।

उस दिन पहली बार मेरी माँ सचमुच बिस्तर से नहीं उठी।

सुबह अलार्म तो बजा... लेकिन किसी ने मेरे बाल सहलाकर नहीं कहा-बेटा, स्कूल नहीं जाना क्या?

मैं देर से उठा। यूनिफॉर्म प्रेस नहीं थी। मोझे एक कमरे में थे, जूते दूसरे कमरे में। टिफिन खाली पड़ा था।

पापा रसोई में खड़े थे। उन्होंने पहली बार रोटी बनाने की कोशिश की। रोटी गोल नहीं

बनी... भारत का नक्शा बन गई।

मैंने पहली बार देखा कि माँ एक साथ कितने काम करती हैं।

स्कूल से लौटा तो दरवाज़े पर कोई इंतज़ार नहीं कर रहा था।

माँ बिस्तर पर थीं। फिर भी मुस्कुराकर बोलीं- आ गया मेरा राजा बेटा?

मैंने कहा-माँ, भूख लगी है।

उन्होंने उठने की कोशिश की।

लेकिन दर्द से कराहकर फिर लेट गई।

उस दिन पहली बार मैंने अपने लिए खुद खाना निकाला।

खाना ठंडा था... लेकिन उससे ज़्यादा ठंडा घर लग रहा था।

रात को मैंने देखा कि माँ को तेज़ बुखार था। फिर भी वह पापा से पूछ रही थीं—

बेटे ने दूध पी लिया?

होमवर्क कर लिया?

कल उसकी ड्राइंग कॉपी रखना मत भूलना।

उन्हें अपनी दवाई से ज़्यादा मेरी चिंता थी।

अगले दिन मैंने माँ का मोबाइल उठाया।

मुझे लगा होगा कि इसमें गेम होंगे।

लेकिन उसमें सबसे ज़्यादा फोटो मेरी थीं।

पहली बार स्कूल गया था... मेरी फोटो।

पहली बार साइकिल चलाई थी... मेरी फोटो।

जब मुझे बुखार आया था... मेरी फोटो।

माँ के मोबाइल में उनकी खुद की एक भी अच्छी तस्वीर नहीं थी।

जितनी तस्वीरें थीं... सब मेरी थीं।

उस दिन मुझे समझ आया कि शायद माँ अपनी ज़िंदगी नहीं जीतीं... वो तो हमारी ज़िंदगी जीती हैं।

तीसरे दिन मैंने माँ के पैर दबाए।

उन्होंने मुस्कुराकर पूछा-आज सूरज पश्चिम से निकला क्या?

मैं हँस तो दिया... लेकिन मेरी आँखों में आँसू थे।

मुझे याद आया... मैंने कितनी बार उन्हें कहा था-आपको कुछ नहीं आता... आप हर समय डाँटती रहती हो।

लेकिन सच तो यह था कि मुझे ही कुछ नहीं आता था।

मुझे यह भी नहीं पता था कि मेरी स्कूल की शर्ट अलमारी में अपने आप नहीं आती...

टिफिन अपने आप नहीं भरता...

बिस्तर अपने आप नहीं लगता...

मेरी पसंद का खाना अपने आप नहीं बनता...

इन सबके पीछे मेरी माँ की नींद, उनका समय और उनकी पूरी ज़िंदगी लगी होती है।

अब अगर भगवान मुझसे पूछें कि दुनिया का सबसे मुश्किल काम कौन-सा है...

तो मैं कहूँगा—

माँ होना।

क्योंकि माँ छुट्टी नहीं ले सकती।

उसे बुखार हो... तब भी घर चलता है।

उसे दर्द हो... तब भी बच्चों की चिंता रहती है।

उसे रोना आए... तब भी वह मुस्कुराकर खाना परोसती है।

अब मैं भगवान से कभी यह नहीं कहूँगा कि मेरी माँ एक दिन के लिए कहीं चली जाए।

मैं तो यही कहूँगा—

भगवान... मेरी उम्र भी मेरी माँ को दे देना।

क्योंकि अगर माँ घर में हो... तो छोटा-सा घर भी स्वर्ग लगता है।

निबंध यहीं समाप्त हो गया।

कॉपी पकड़ते-पकड़ते माँ के हाथ काँपने लगे।

आँसू कॉपी के पन्नों पर गिरने लगे।

उन्हें याद आया कि पिछले महीने बेटे ने गुस्से में कहा था-आप सिर्फ़ डाँटना जानती हो।

उस दिन वह पूरी रात रोई थीं।

लेकिन आज उसी बेटे ने बिना किसी के कहे उनकी पूरी ज़िंदगी पढ़ ली थी।

प्रिंसिपल ने धीरे से कहा—

ठबच्चे हमारी बातें नहीं... हमारा त्याग पढ़ लेते हैं। बस उन्हें समझने में थोड़ा समय लगता है।

माँ घर पहुँची।

बेटा दरवाज़े पर दौड़कर आया।

इस बार उसने कुछ नहीं कहा।

बस माँ के गले लग गया।

माँ ने उसके सिर पर हाथ फेरा।

दोनों चुप थे...

लेकिन उस खामोशी में हज़ार शब्द थे।

उस दिन पहली बार बेटे ने खुद अपनी प्लेट उठाई...

अपने जूते खुद साफ़ किए...

और रात को सोने से पहले माँ के पास जाकर बोला—माँ... आज से आपको छुट्टी नहीं दूँगा...

लेकिन काम में अकेला भी नहीं छोड़ूँगा।

माँ मुस्कुरा दीं।

उन्हें लगा जैसे उनकी सारी थकान उसी एक वाक्य में उतर गई।

याद रखिए...

बच्चे माँ-बाप की कीमत तब नहीं समझते जब वे उनके लिए सब कुछ कर रहे होते हैं। कीमत तब समझ आती है, जब एक दिन वही हाथ थक जाते हैं। इसलिए इंतज़ार मत कीजिए। आज ही अपनी माँ-बाप के पास बैठिए, उनका हाथ पकड़िए और इतना ज़रूर कहिए- आप हैं, इसलिए मेरा संसार है। (साभार)

मशहूर मुसनिद्वार मुश्ताक अहमद लिखते हैं

“
दुनिया में आप इसलिए मार खा रहे हैं कि आप मुसलमान हैं और आखिरत में आप इसलिए मार खाएँगे कि आप मुसलमान थे ही नहीं !

इस शायर का यह संदेश हमें हमारी पहचान और ईमान की गहराई को समझने की चेतावनी देता है। केवल नाम से नहीं, बल्कि अपने कर्मों, विचारों और जीवन के हर पहलू में हमें एक सच्चे मुसलमान बनना होगा। दुनिया की तकलीफें अन्धव्यी हैं, लेकिन आखिरत का हिसाब हमेशा के लिए है।

आइए, हम अपने ईमान को मजबूत करें और सच्चे मुसलमान बनें।

स्वर्गीय सफ़ात अली

प्रथम पुण्यतिथि

26 जुलाई 2026

إِنَّا لِلّٰهِ وَإِنَّا إِلَيْهِ رَاجِعُونَ

मरहूम सफ़ात अली की पहली बरसी पर

अल्लाह तआला मरहूम की मराफ़िरत फ़रमाए, उनकी क़ब्र को नूर से भर दे, जन्नतुल फ़िरदीस में आला मुक़ाम अता फ़रमाए, और तमाम अहले-ख़ानदान को सब-ए-जमील अता फ़रमाए। आमीन।

“दुआओं में हमेशा याद रहेंगे। आपकी यादें हमारे दिलों में हमेशा ज़िंदा रहेंगी”

ख़िराज-ए-अक़ीदत व हार्दिक श्रद्धांजलि

— लियाक़त अली उमस एवं अली परिवार



राजस्थान अधिकारी/कर्मचारी माइनोरिटी एशोसिएशन (RAKMA) की नई कार्यकारिणी घोषित

डीग जिले से नवीन RAKMA प्रदेश कार्यकारिणी में जनाब तैय्यब हुसैन व्याख्याता, जुरहेरा, को प्रदेश महासमिति सभा अध्यक्ष तथा जनाब मौसम खान अध्यापक लुहेसर को प्रदेश संयुक्त सचिव बनाया गया है। तैय्यब हुसैन एवम मौसम खान द्वारा प्रदेश अध्यक्ष जनाब अतीक अहमद जी का आभार व्यक्त किया है। इसके अलावा डीग जिले के रकमा के जिलाध्यक्ष जनाब अखतर अली बिरार एवम समस्त जिला कार्यकारिणी द्वारा दोनों साथियों को बधाई और मुबारकबाद पेश की गई है।

‘मैं CJI सूर्यकांत का धन्यवाद करता हूँ अगर उन्होंने हमें काँकरोच न कहा होता तो धर्मप्रधान इस्तीफा नहीं देते’

- अभिजीत दीपके, प्रमुख CJP



बेनूरी है अब नजारों पे क्या लिक्खा जाएगा इस मौसम मे बहारों पे क्या लिक्खा जाएगा दरवाजे पर तो मुझको गद्दार लिखा है उन्होंने सोचता हूँ अब दिवारों पे क्या लिक्खा जाएगा बस्तियों के बच्चे अनपढ़ रह जाएंगे तो कल घर आंगन और द्वारों पे क्या लिक्खा जाएगा अपने ही अजीज अगर लूटेंगे मारेंगे तो फिर प्यार वफ़ा भाई चारों पे क्या लिक्खा जाएगा जमीं पे नफरत लिखकर चांद पे बसने वालों ये बताओ चांद तारों पे क्या लिक्खा जाएगा

-सिद्दीक अहमद मेव

इंतकाल

ताला। दौलतगंज खेड़ा खरवा कला के पास जानब बाबू खा, मेव के बड़े लड़के अयूब भाई के बड़े भाई, असलम भाई मेव जिनका पिछले दिनों इंतकाल हो गया है जिनकी जनाजे की नमाज बाद नमाजे मगरिब रखी जाकर स्थानीय कब्रस्तान में सुपुर्दे खाक किया गया।

रतलाम। मेवाती बिरादरी के जनाब हाजी सिकंदर मेव (सेल्स टैक्स आफिस वाले) निवासी काजीपुरा का पिछले दिनों इंतकाल हो गया। जिनके जनाजे की नमाज अदा कर काजीपुरा कब्रस्तान में सुपुर्देखाक किया गया।

ताला। माकनपुरा ताल सितारा बस के संचालक सतार भाई की बेहान अकीला आपा का पिछले दिनों इंतकाल हो गया है जिन्की जानजे की नामज जुम्मा की नमाज बाद रखी जाकर स्थानीय कब्रस्तान में सुपुर्दे खाक किया गया।

न्यू मेव टाइम्स परिवार एवं मेव एजुकेशनल वेल्फेयर अवेयरनेस ट्रस्ट अल्लाह से मरहूमों के लिए दुआ करता है।

अपने ही घर में अजनबी

बेबी के इंतकाल के दिन महमूद साहब की उम्र सिर्फ पैंतालिस बरस थी। ताज़ियत के लिए आने वाले हर शख्स ने एक ही मशवरा दिया।

महमूद भाई, अभी तुम्हारी उम्र ही क्या है? दूसरी शादी कर लो।

वो हर बार मुस्कुरा देते, फिर अपने बारह साला बेटे अम्मार के सर पर हाथ रख कर कहते, ठअल्लाह ने मुझे इसकी सूरत में मेरी बेबी की आखिरी अमानत दे दी है। अब मेरी बाकी ज़िंदगी इसी अमानत की हिफाज़त है।

इसके बाद उन्होंने वाकई अपनी ज़िंदगी बेटे के नाम कर दी। कारोबार बढ़ता गया, मगर इनकी दुनिया सिमट कर सिर्फ एक लड़के की मुस्कुराहट रह गई। अपनी ख्वाहिशें, अपनी तन्हाइयां, अपनी रातें... सब उन्होंने खामोशी से दफ़न कर दीं।

वक़्त ने पलटा खाया।

अम्मार जवान हुआ, आला तालीम हासिल की, और एक दिन बाप ने सारा कारोबार उसके हवाले कर दिया।

अब तुम संभालो। मैं थक गया हूँ।

लेकिन थकन जिस्म की नहीं थी... रिश्ते की थी, जिसे वो खुद अपने हाथों आहिस्ता आहिस्ता पीछे हटा रहे थे।

फिर अम्मार की शादी हो गई।

घर में नई हंसी आई, नए पर्दे लगे, फ़र्नीचर बदला, बर्तन बदले, हत्ता कि बावरची खाने की तरतीब भी बदल गई।

और महमूद साहब?

वो भी बदल गए।

अब वो कभी दफ़्तर में बैठे रहते, कभी किसी पुराने दोस्त की दुकान पर चाय पीते, और शाम ढले सिर्फ सोने के लिए घर लौटते। अपने ही घर में वो ऐसे चलते जैसे किसी और के मकान में मेहमान हों।

एक दोपहर सब एक ही दस्तरख़वान पर बैठे थे।

महमूद साहब ने रोटी का आखिरी निवाला तोड़ते हुए नरमी से कहा,

बेटा... अगर ज़रा सा दही हो तो दे दो।

बावरची खाने से बहू की आवाज़ आई,

आज घर में दही नहीं है, अबा जी।

अच्छा... उन्होंने पानी का घूंट लिया और खामोशी से उठ गए।

किसी ने इनके चेहरे पर नज़र नहीं डाली।

वो हस्ब-ए-मामूल वाक के लिए निकल गए।

इनके जाते ही बहू ने फ़्रिज खोला, ठंडी दही की प्याली निकाली

और अम्मो के सामने रख दी।

गर्मी बहुत है, दही के बग़ैर तुम्हारा खाना मुकम्मल नहीं होता। अम्मार ने प्याली की तरफ़ देखा।

फिर दरवाज़े की तरफ़, जहां से अभी अभी उसके बाप की आहिस्ता आहिस्ता दूर होती चप्पलों की आवाज़ गुम हुई थी।

उसने एक लम्हे को बेबी की आंखों में देखा।

फिर खामोशी से दही खा लिया।

उसने कोई झगड़ा नहीं किया।

कोई नसीहत नहीं की।

सिर्फ उस दिन के बाद उसके अंदर कुछ हमेशा के लिए खामोश हो गया।

चंद रोज़ गुज़रे।

एक सुबह उसने वालिद से कहा,

अबा, आज दस बजे तैयार रहिएगा। हमें कचहरी जाना है। ठ क्यों?

आप की शादी है।

महमूद साहब के हाथ से अखबार फिसल गया।

पागल हो गए हो? इस उम्र में? मुझे किसी शादी की ज़रूरत नहीं। मैंने तो सारी ज़िंदगी तुम्हारे लिए गुज़ारी है।

अम्मार ने पहली बार बाप की आंखों में वैसे देखा जैसे एक मर्द दूसरे मर्द की कुर्बानी को पहचानता है।

अबा... मैं अपने लिए मां नहीं ला रहा, न अपनी बेबी के लिए सास।

वो रुका, फिर धीरे से बोला,

मैं सिर्फ आप के लिए एक प्याली दही का बंदोबस्त कर रहा हूँ।

कमरे में ऐसी खामोशी उतरी कि दीवार पर लगी घड़ी की टिक टिक भी शर्मिदा महसूस होने लगी।

अम्मार ने जेब से घर की चाबी निकाली और मेज़ पर रख दी।

आज शाम मैं और मेरी बेबी किराए के एक छोटे से फ्लैट में मुंतकिल हो जाएंगे। कल से मैं आप के दफ़्तर में सिर्फ एक मुलाज़िम की हैसियत से आऊंगा, तनख़्वाह लूंगा... ताकि जिस घर की हर चीज़ आप ने हमें दे दी, वहां रहने वालों को एक प्याली दही की क़ीमत समझ आ जाए।

बावरची खाने में खड़ी बहू के हाथ से शीशे का गिलास छूट कर फ़र्श पर बिखर गया।

टूटने की आवाज़ मामूली थी, मगर उसके अंदर बरसों से जमी हुई खुदग़ज़ी में एक दरार पड़ चुकी थी।

वो लरज़ते क़दमों से बाहर आई। उसकी नज़रें झुकी हुई थीं। फ़्रिज से दही की वही प्याली निकाली, जिसे चंद लम्हे पहले उसने सिर्फ अपने शौहर के लिए महफूज़ रखा था, और खामोशी से महमूद साहब के सामने रख दी।

फिर इनके क़दमों में बैठ गई।

अबा जी... मुझे माफ़ कर दीजिए। आज समझ आई है कि मैंने आप से दही नहीं, आप का हक़ छीना था।

महमूद साहब ने कांपते हाथों से उसके सर पर हाथ रखा, मगर इनकी आंखों में ऐसी नमी थी जो सिर्फ बुढ़ापे की तन्हाई जानती है।

उन्होंने धीरे से कहा,

बेटी... भूख़ रोटी न मिलने से नहीं लगती... भूख़ उस दिन लगती है जब अपने ही घर में इंसान को ये एहसास दिलाया जाए कि वो इज़ाफ़ी है।

अम्मार ने आगे बढ़ कर बाप के हाथ थाम लिए।

उस रोज़ न कोई अदालत गया, न कोई निकाह हुआ, न कोई घर बिखरा।

सिर्फ एक दस्तरख़वान पर बैठे तीन लोगों ने पहली बार एक दूसरे को देखना सीख लिया।

और उस दिन के बाद उस घर में दही कभी ख़त्म नहीं हुई। रिश्ते रोटी से नहीं निभते, इज़ज़त से निभते हैं; और जिस घर में बुजुर्ग की इज़ज़त कम हो जाए, वहां नेमतें चाहे जितनी भी हों, बरकत खामोशी से दरवाज़ा छोड़ जाती है।

रुक जाएं... एक लम्हा ज़रूर दें!

अगर आप यहां तक पढ़ चुके हैं तो यकीनन आप के दिल में दीन की मुहब्बत और मुसलमानों की खैरख़्वाही मौजूद है अब एक छोटी सी दरख़वास्त है... इस पैग़ाम को सिर्फ पढ़ कर मत गुज़र जाएं। इसे अपने तमाम दोस्तों, रिश्तेदारों और हर पूँज ग्रुप में अभी शेयर कर दें क्या मालूम आप के एक शेयर की वजह से किसी की नमाज़ शुरू हो जाए, कोई गुनाह छोड़ दे, या कोई अल्लाह की तरफ़ लौट आए। याद रखें! एक शेयर सिर्फ चंद सेकंड लेता है, मगर अगर इससे किसी की ज़िंदगी बदल गई तो इसका सवाब आप को भी मिलता रहेगा, इन शा अल्लाह अल्लाह के लिए अभी शेयर करें, शायद यही अमल आप के लिए सदक़ा-ए-जारिया और आख़िरत में नजात का ज़रिया बन जाए।

-सोहराब खान

स्कॉलरशिप • आवेदन जुलाई से नवंबर के बीच में शुरू, जानें योग्यता और लाभ

प्राइमरी स्कूल से लेकर कॉलेज विद्यार्थियों के लिए दस प्रमुख स्कॉलरशिप जानें...

नई दिल्ली | उच्च शिक्षा की बढ़ती फीस छात्रों के लिए बड़ी चुनौती बन गई है। इंजीनियरिंग, मेडिकल, लॉ, मैनेजमेंट और ग्रेजुएशन की पढ़ाई पर लाखों रुपए खर्च होते हैं। ऐसे में सरकार और कई बड़ी कंपनियां हर साल लाखों रुपए की स्कॉलरशिप देती हैं। सरकारी स्कॉलरशिप के आवेदन आमतौर पर जुलाई से अक्टूबर और कॉर्पोरेट स्कॉलरशिप के अगस्त से दिसंबर के बीच आते हैं। आवेदन से पहले आय प्रमाण पत्र, जाति प्रमाण पत्र, पिछली कक्षा की मार्कशीट, आधार लिंक बैंक खाता व बोनाफाइड सर्टिफिकेट तैयार रखें।

ये हैं टॉप स्कॉलरशिप के बारे में जानकारी...

1. नेशनल स्कॉलरशिप पोर्टल

- यह सरकार का कॉमन स्कॉलरशिप पोर्टल है। यहां केंद्र और राज्य सरकारों की सैकड़ों स्कॉलरशिप मिलती हैं।
- फील्ड:** सभी स्ट्रीम (कला, विज्ञान, वाणिज्य, तकनीकी और व्यावसायिक कोर्स)।
- आवेदन:** 31 अक्टूबर तक।
- फिस्कैलिटी:** कक्षा 1 से PhD तक के छात्र।

- राशि:** 2,500 से 75,000 रुपए प्रति वर्ष।

2. सेंट्रल सेक्टर स्कॉलरशिप

- यह शिक्षा मंत्रालय की योजना है। इसके लिए NSP के माध्यम से 31 अक्टूबर तक आवेदन कर सकते हैं।
- फील्ड:** ग्रेजुएशन और पीजी के सभी स्ट्रीम, प्रोफेशनल कोर्स सहित।
- योग्यता:** 12वीं में टॉप 20% में शामिल हों।
- पारिवारिक आय:** 4.5 लाख रु से कम हो।

- राशि:** ग्रेजुएशन-12,000, पीजी-20,000 रु.

3. इंस्पायर स्कॉलरशिप

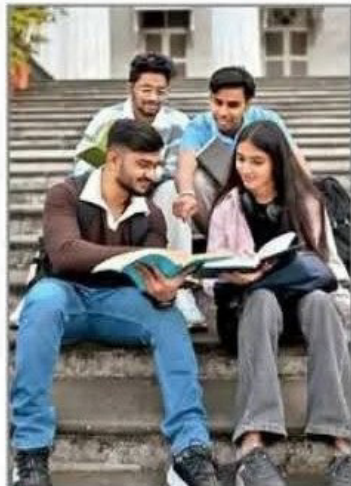
- यह विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग (DST) की योजना है।
- फील्ड:** केवल बेसिक और प्राकृतिक विज्ञान (भौतिकी, रसायन, गणित, जीव विज्ञान आदि)।
- योग्यता:** 12वीं में टॉप 1% और बेसिक साइंस में पढ़ाई।

- राशि:** 80,000 प्रति वर्ष, अधिकतम 5 वर्ष।

4. AICTE प्रगति स्कॉलरशिप

- यह छात्रों के लिए है। इसके लिए 31 अक्टूबर तक आवेदन कर सकते हैं।
- फील्ड:** तकनीकी शिक्षा (इंजीनियरिंग, बीटेक, डिप्लोमा)।
- योग्यता:** AICTE मान्यता प्राप्त संस्थान में प्रथम वर्ष में प्रवेश। पारिवारिक आय 8 लाख रुपए से कम।

- राशि:** 50,000 रुपए प्रति वर्ष।



5. प्रधानमंत्री स्कॉलरशिप स्कीम (PMSS)

- यह स्कॉलरशिप स्कीम पूर्व सैनिकों, शहीद और अर्धसैनिक बलों के आश्रित बच्चों के लिए है।
- फील्ड:** प्रोफेशनल कोर्स (इंजीनियरिंग, मेडिकल, डेंटल, वकालत और मैनेजमेंट आदि) सब शामिल है।
- आवेदन:** 31 अक्टूबर तक।

- राशि:** छात्रों को 30,000 रुपए और छात्राओं को 36,000 रुपए प्रति वर्ष।

6. AICTE सक्षम स्कॉलरशिप

- यह दिव्यांग छात्रों के लिए है। इसके लिए 31 अक्टूबर तक आवेदन कर सकते हैं।
- फील्ड:** तकनीकी शिक्षा (डिप्लोमा और डिग्री स्तर के टेक्निकल कोर्स)।
- योग्यता:** 40% या अधिक दिव्यांगता। AICTE संस्थान में तकनीकी कोर्स। पारिवारिक आय 8 लाख रुपए से कम।

- राशि:** 50,000 रुपए प्रति वर्ष।

7. रिलायंस फाउंडेशन स्कॉलरशिप

- यह आर्थिक रूप से कमजोर मेधावी छात्रों को उच्च शिक्षा के लिए छात्रवृत्ति प्रदान करती है।
- फील्ड:** विज्ञान, इंजीनियरिंग, टेक्नोलॉजी सहित स्नातक स्तर के कोर्स।
- योग्यता:** प्रथम वर्ष के यूजी। 12वीं में 60% अंक। पारिवारिक आय 15 लाख रु से कम।
- आवेदन:** 15 अक्टूबर तक।

- राशि:** पूरे कोर्स के दौरान 2 लाख रुपए तक।

8. टाटा कैपिटल पंख स्कॉलरशिप

- फील्ड:** सभी स्ट्रीम (11वीं-12वीं, ग्रेजुएशन और प्रोफेशनल कोर्स)।
- योग्यता:** 11वीं, 12वीं, ग्रेजुएशन या प्रोफेशनल कोर्स के छात्र। 60% अंक और पारिवारिक आय 4 लाख रुपए से कम।
- आवेदन:** 15 नवंबर तक।

- राशि:** ग्रेजुएशन फीस का 80% या 10,000 रुपए से 50,000 रुपए तक।

9. HDFC बैंक परिवर्तन ECSS

- यह आर्थिक संकट से जूझ रहे छात्रों के लिए है। आवेदन की तारीख घोषित नहीं हुई है। आमतौर पर आवेदन दिसंबर तक शुरू होते हैं।
- फील्ड:** सभी स्ट्रीम (कक्षा 1 से पीजी और डिप्लोमा तक)।
- योग्यता:** कक्षा 1 से पीजी और डिप्लोमा तक के छात्र।

- राशि:** 15,000 से 75,000 रुपए प्रति वर्ष।

10. कोटक कन्या स्कॉलरशिप

- यह केवल छात्राओं के लिए है।
- फील्ड:** प्रोफेशनल डिग्री (बीटेक, एमबीबीएस और अन्य प्रोफेशनल कोर्स)।
- योग्यता:** IIT, NIT, AIIMS जैसे संस्थानों में प्रोफेशनल कोर्स। 12वीं में 85% अंक ज़रूरी है। पारिवारिक आय 6 लाख रुपए से कम होनी चाहिए।

- राशि:** 1.5 से 2 लाख रुपए प्रति वर्ष।

मुस्लिमों पर हो रहे अत्याचारों और नाइंसाफी पर मीटिंग सम्पन्न

नई दिल्ली। कॉन्स्टिट्यूशन क्लब ऑफ इंडिया, दिल्ली में आईएमसीआर और एपीसीआर तंजीम द्वारा देश के अलग अलग राज्यों में सोची समझी रणनीति के तहत मुसलमानों को निशाना बनाया जा रहा, जिसमें उत्तरप्रदेश, उत्तराखंड, मध्यप्रदेश, असम, हरियाणा, राजस्थान, महाराष्ट्र, बिहार, और भी बहुत सी जगह हैं जहाँ पर लगातार मुसलमानों को, मस्जिद, मदरसो, खानकाओ, दरगाहों को निशाना बनाया जा रहा है, मुसलमान को जगह जगह मारा जा रहा है, इन्हीं सब मुद्दों को लेकर एक मीटिंग रखी गई थी।

मीटिंग पर मौजूद सुप्रीम कोर्ट के वरिष्ठ अधिवक्ता पूर्व विदेश मंत्री भारत सरकार सलमान खुर्शीद साहब, पूर्व राज्यसभा सांसद अदीब सिद्दीकी साहब, एपीसीआर के राष्ट्रीय सचिव नदीम खान साहब, राष्ट्रीय उलेमा कॉन्सिल के सदर आमिर



रशीदी साहब, पूर्व मुख्यमंत्री जम्मू कश्मीर फारुख अब्दुल्लाह साहब, पूर्व मुख्यमंत्री जम्मू कश्मीर महबूबा मुफ्ती, पूर्व चीफ जस्टिस बिहार मुहम्मद

इकबाल साहब, पूर्व राष्ट्रीय महिला आयोग सदस्या पद्मश्री डॉ. सैयदा सैयदेन हमीद साहिबा, पूर्व मुख्यसचिव उत्तरप्रदेश अनीस अंसारी साहब, कश्मीर

से सांसद आगा रुहुल्लाह साहब, सांसद बहान इकरा हसन, सांसद इमरान मसूद साहब, सांसद भाई ज़िया उर रहमान बर्क साहब, सांसद मोहिबुल्लाह नदवी साहब, सुप्रीम कोर्ट वरिष्ठ अधिवक्ता फुजैल अय्यूबी साहब, भोपाल से विधायक आरिफ मसूद साहब, समाजवादी महाराष्ट्र के अध्यक्ष अबू हासिम आज़मी साहब, पूर्व सांसद कुंवर दानिश अली साहब सहित और भी कई मुस्लिम सांसदों ने और कई बड़ी तंजीमों के अहम ज़िम्मेदारों ने शिरकत की। 5 घंटे मुसलमानों के साथ हो रही ना-इंसाफी, जुल्म और अधिकारों के हनन पर गंभीरता से सभी ने बात रखी और तय किया गया कि जल्द एक कमेटी बनाई जायेगी जो संजीदगी के साथ मुल्क में मुसलमानों पर हो रहे जुल्मों के खिलाफ कदम उठायेगी।

जनसेवा के प्रति समर्पित इनामुल हसन जिला कांग्रेस कमेटी, डीग के महासचिव नियुक्त

डीग। जनहित के मुद्दों पर निरंतर संघर्षरत समाजसेवी एवं कांग्रेस के सक्रिय कार्यकर्ता श्री इनामुल हसन को जिला कांग्रेस कमेटी, डीग का जिला महासचिव नियुक्त किए जाने पर क्षेत्र के सामाजिक, राजनीतिक एवं प्रबुद्ध वर्ग में हर्ष का वातावरण है। उनकी नियुक्ति को संगठन द्वारा जनसेवा, संघर्षशीलता एवं समर्पित कार्यशैली का सम्मान माना जा रहा है।

श्री इनामुल हसन ने अपनी प्रारंभिक शिक्षा राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय कामां व उच्च शिक्षा देश के प्रतिष्ठित संस्थानों जामिया मिलिया इस्लामिया, नई दिल्ली तथा टाटा सामाजिक विज्ञान संस्थान (TISS), मुंबई से प्राप्त की है। उन्हें एक दशक से अधिक समय तक विभिन्न गैर-सरकारी संगठनों (NGOs) के साथ कार्य करने का अनुभव है। शिक्षा, स्वास्थ्य, मानवाधिकार एवं सामाजिक न्याय उनके प्रमुख कार्यक्षेत्र रहे हैं।

श्री इनामुल हसन लंबे समय से

आमजन की मूलभूत समस्याओं-बिजली, पानी, सड़क, शिक्षा तथा अन्य जनहित से जुड़े मुद्दों-को प्रशासन एवं संबंधित विभागों के समक्ष प्रभावी ढंग से उठाते रहे हैं। किसानों के हितों की रक्षा के लिए उन्होंने किसान क्रेडिट कार्ड (खण्ण) से संबंधित अनियमितताओं एवं बैंकिंग धोखाधड़ी के मामलों को प्रमुखता से उठाया, जिसके परिणामस्वरूप अनेक किसानों को उनकी राशि वापस दिलाने में महत्वपूर्ण सफलता मिली।

उन्होंने सूचना का अधिकार अधिनियम, 2005 (RTI), वृद्धावस्था पेंशन तथा अन्य जनकल्याणकारी योजनाओं में होने वाली अनियमितताओं एवं भ्रष्टाचार के मामलों को उजागर करने के लिए भी निरंतर कार्य किया है। इसके अतिरिक्त, विभिन्न कारणों से गलत तरीके से ब्लॉक अथवा फ्रीज़ किए गए बैंक खातों को पुनः संचालित कराने में ज़रूरतमंद लोगों की सहायता की है।

श्री इनामुल हसन ने मनरेगा,

प्रधानमंत्री उज्ज्वला योजना, प्रधानमंत्री आवास योजना सहित विभिन्न सरकारी कल्याणकारी योजनाओं का लाभ वास्तविक पात्र एवं ज़रूरतमंद व्यक्तियों तक पहुँचाने के लिए लगातार प्रयास किए हैं। उनकी कार्यशैली सदैव जनहित, पारदर्शिता एवं सामाजिक उत्तरदायित्व पर आधारित रही है।

कांग्रेस नेतृत्व द्वारा उन्हें जिला महासचिव जैसी महत्वपूर्ण संगठनात्मक जिम्मेदारी सौंपे जाने को उनकी जनसेवा के प्रति निष्ठा, संघर्षशील व्यक्तित्व एवं संगठन के प्रति समर्पण का सम्मान माना जा रहा है। विश्वास व्यक्त किया गया है कि वे भविष्य में भी गरीबों, किसानों, मजदूरों, युवाओं तथा समाज के वंचित एवं कमजोर वर्गों की आवाज़ को और अधिक मजबूती के साथ उठाते हुए संगठन और जनहित दोनों को नई दिशा एवं शक्ति प्रदान करेंगे।

उनकी नियुक्ति पर क्षेत्र के अनेक सामाजिक, राजनीतिक एवं प्रबुद्ध नागरिकों ने प्रसन्नता व्यक्त करते हुए उन्हें हार्दिक बधाई एवं सफल, जनोन्मुखी कार्यकाल के लिए शुभकामनाएँ प्रेषित की हैं।

ये अर्चिता सारंगी हैं जो पूर्व IAS और भुवनेश्वर से भाजपा की सांसद अपराजिता सारंगी की बेटी हैं।

कल जब धर्मेन्द्र प्रधान ने अपने शिक्षा मंत्री के पद से इस्तीफा दिया तो अर्चिता सारंगी ने Gen & Q को सपोर्ट किया और अपने इंस्टाग्राम अकाउंट पर धर्मेन्द्र प्रधान के इस्तीफे पर सेलिब्रेट करते हुए एक स्टोरी लगा दी।

कुछ देर बाद ये पोस्ट वायरल हो गई तो, उनपर स्टोरी डिलीट करने का दबाव बनाया जाने लगा था क्योंकि उनकी मां अपराजिता सारंगी धर्मेन्द्र प्रधान को खुला समर्थन कर रही थीं।

उसके कुछ देर बाद अर्चिता ने एक स्टोरी और लगाई और धर्मेन्द्र प्रधान के ई को टारगेट करते हुए कहा कि मुझे पता था मां को मैसेज करोगे, लेकिन मैं स्टोरी डिलीट नहीं करूंगी। और लोग और अंध भक्त यहां सोच रहे हैं कि सिर्फ विपक्ष ही धर्मेन्द्र प्रधान का इस्तीफा मांग रहा

अपील

जैसा कि आप जानते हैं पिछले 33 सालों से न्यू मेव टाइम्स अखबार कौम की आवाज बन पूरे मुल्क के मेवों को जोड़ने एवं उनके सुख-दुख की खबरें निःशुल्क प्रकाशित करता आ रहा है। अतः अपनी अभी तक की सहयोग राशि एवं विज्ञापन शुल्क निम्नलिखित बैंक के खाते में जमा कराकर कौम की आवाज को मजबूती दें।

बैंक-अपेक्स बैंक, इंदौर (MPSCB) A/c No. 187001557250
IFSC : CBI No. MPABAA MICR 45228102, Branch Code-9

पंचायती राज मंत्री की चेतावनी के बावजूद ग्राम जोधपुर में सफाई व्यवस्था बदहाल, ग्रामीणों का आवागमन प्रभावित

डीग/पहाड़ी। राजस्थान सरकार के पंचायती राज मंत्री श्री मदन दिलावर द्वारा ग्राम पंचायतों में नियमित साफ-सफाई सुनिश्चित करने तथा लापरवाही बरतने वाले अधिकारियों के विरुद्ध सख्त कार्रवाई की लगातार चेतावनी दिए जाने के बावजूद पंचायत समिति पहाड़ी की ग्राम पंचायत खेडलीमन्ना के ग्राम जोधपुर में सफाई व्यवस्था पूरी तरह उपेक्षित दिखाई दे रही है।

गांव के प्रमुख रास्तों एवं सार्वजनिक स्थानों पर फैली गंदगी के कारण ग्रामीणों को आवागमन में भारी परेशानी का सामना करना पड़ रहा है। स्थानीय लोगों का आरोप है कि कई बार पंचायत प्रशासन एवं ग्राम विकास अधिकारी को मौखिक एवं लिखित रूप से अवगत कराने के बावजूद अब तक कोई प्रभावी

कार्रवाई नहीं की गई है।

ग्रामीणों का कहना है कि बरसात के मौसम में स्थिति और भी गंभीर हो गई है। रास्तों पर जमा गंदगी और जलभराव के कारण संक्रमण एवं संक्रामक बीमारियों का खतरा बढ़ गया है, वहीं बच्चों, बुजुर्गों और महिलाओं को दैनिक आवागमन में विशेष कठिनाइयों का सामना करना पड़ रहा है।

ग्रामीणों ने जिला प्रशासन एवं पंचायती राज विभाग से मांग की है कि ग्राम जोधपुर में तत्काल विशेष सफाई अभियान चलाकर रास्तों को साफ कराया जाए तथा सफाई व्यवस्था में लापरवाही बरतने वाले संबंधित अधिकारियों एवं कर्मचारियों के विरुद्ध नियमानुसार आवश्यक कार्रवाई की जाए, ताकि ग्रामीणों को मूलभूत सुविधाएं उपलब्ध हो सकें।

ADMISSIONS OPEN FOR NEET

X, XI, XII & DROPPER BATCHES



DR. PUNEET GUPTA
Director (Academics)
Head of Biology

मध्यभारत में NEET के लिये
सबसे विश्वसनीय संस्थान !



MR. RAEES KHAN
Director (Academics)
Head of Chemistry

**7000 + MBBS
Selections**

MEDISQUAD CLASSES PVT. LTD.

Premium Institute for NEET, XI & XII

Contact : 0731-4988810

9425074587 | 9827320022

Victory Chamber, 4-A, Ratlam Kothi,
Near Geeta Bhawan Square, Indore